वर्ष: 6 अंक: 20

16-30 अप्रैल, 2026 (नि:शुल्क)

न्यू इंडिया समाचार

नक्सल मुक्त नया भारत

31 मार्च 2026 नक्सल मुक्त भारत का सपना हुआ साकार, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार की मजबूत इच्छाशक्ति और विकास की सोच ने देश में बढ़ाया शांति और भरोसा...

ई-कॉपी के लिए QR स्कैन करें

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आग्रह

फिटनेस पर जरूर दें ध्यान, चीनी और तेल का कम करें इस्तेमाल

'मन की बात' कार्यक्रम के लिए हर महीने देश के अलग-अलग हिस्सों से ढेरों संदेश मिलते हैं। इससे पता चलता है कि दूर-दराज के क्षेत्रों में रहने वाले लोग कितने चाव से इसे सुनते हैं। लोगों के सुझावों से लगता है कि यह सिर्फ एक कार्यक्रम नहीं बल्कि एक साझा संवाद बन गया है। लोगों के विचार और अनुभव, इस कार्यक्रम को लगातार बेहतर बनाने की प्रेरणा देते हैं। 29 मार्च को प्रस्तुत कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने फिटनेस पर ध्यान देने, चीनी और तेल का कम इस्तेमाल करने सहित कई महत्वपूर्ण विषयों पर बात की। प्रस्तुत है प्रमुख अंश...

- **खाड़ी देशों का आभार :** वर्तमान में हमारे पड़ोस में भीषण युद्ध चल रहा है। हमारे लाखों परिवारों के सगे-संबंधी इन देशों में रहते हैं। मैं खाड़ी देशों का बहुत आभारी हूं, वे ऐसे एक करोड़ से ज्यादा भारतीयों को वहां पर हर प्रकार की मदद दे रहे हैं।
- **अफवाह से बचें :** मैं सभी देशवासियों से अपील करूंगा कि वो जागरूक रहें, अफवाहों के बहकावे में न आएं। सरकार की तरफ से जो आपको निरंतर जानकारी दी जा रही है, उस पर भरोसा करें और उसी पर विश्वास कर कोई कदम उठाएं।
- **देशवासियों का सामर्थ्य :** मुझे हर बार की तरह इस बार भी विश्वास है कि जैसे हमने देश के 140 करोड़ देशवासियों के सामर्थ्य से पुराने संकटों को हराया था, इस बार भी हम सब मिलकर के इस कठिन हालत से बहुत ही अच्छी तरह से बाहर निकल जाएंगे।
- **जल संचय अभियान :** पिछले 11 वर्षों में 'जल संचय अभियान' ने लोगों को बहुत जागरूक बनाया है। इस अभियान के तहत देश-भर में करीब 50 लाख कृत्रिम जल संचयन संरचनाएं बनाई गई हैं।
- **अमृत सरोवर :** अमृत सरोवर अभियान में करीब 70 हजार अमृत सरोवर बनाए गए हैं। बारिश का मौसम आने से पहले इन सरोवरों की साफ-सफाई भी शुरू हो गई है।
- **संस्कृति और विरासत :** ज्ञान भारतम सर्वे का संबंध हमारी महान संस्कृति और समृद्ध विरासत से है। इसका उद्देश्य देशभर में मौजूद पांडुलिपियों के बारे में जानकारी जमा करना है। इस सर्वे से जुड़ने का एक माध्यम, ज्ञान भारतम एप है।
- **मेरा युवा भारत :** राष्ट्र निर्माण के दायित्व में मेरा युवा भारत यानी MY Bharat संगठन बड़ी भूमिका निभा रहा है। यह संगठन देश के युवाओं को अलग-अलग सकारात्मक गतिविधियों से जोड़ रहा है।
- **जो खेलेगा, वो खिलेगा :** मैं अक्सर कहता हूं, जो खेलेगा, वो खिलेगा। मुझे यह देखकर अच्छा लगा कि हमारे देश के युवा, अब उन खेलों को भी खूब अपना रहे हैं जो पहले उतने लोकप्रिय नहीं थे।
- **बीमारियों से दूर :** सभी लोग अपनी फिटनेस पर जरूर ध्यान दें। चीनी सेवन कम करें। हमें खाने के तेल में 10 प्रतिशत की कटौती भी करनी है। इन छोटे-छोटे प्रयासों से आप मोटापे और लाइफस्टाइल से जुड़ी बीमारियों से दूर रहेंगे।
- **समुद्र के योद्धा :** हमारे मछुआरे भाई-बहन सिर्फ समुद्र के योद्धा नहीं हैं, बल्कि वे आत्मनिर्भर भारत की एक मजबूत नींव हैं। टेक्नोलॉजी के जरिए भी मछुआरों की पूरी मदद की जा रही है। आज मत्स्य पालन और समुद्री शैवाल के क्षेत्र में नए-नए इनोवेशन हो रहे हैं। मछुआरे भाई-बहन आत्मनिर्भर बन रहे हैं।
- **करोड़ों पेड़ :** जनभागीदारी का स्वरूप 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के दौरान दिखता है। इस अभियान के तहत देशभर में करोड़ों पेड़ लगाए गए हैं।
- **सोलर पैनल :** घरों की छत पर बड़ी संख्या में सोलर पैनल लगे दिखाई देते हैं। कुछ साल पहले तक इक्का-दुक्का घरों पर ही दिखता था। लेकिन आज 'पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना' का प्रभाव देश के कोने-कोने में दिखने लगा है।

'मन की बात' पूरी सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

न्यू इंडिया
समाचार

वर्षः 6, अंकः 20 । 16-30 अप्रैल, 2026

प्रधान संपादक
धीरेन्द्र ओझा
प्रधान महानिदेशक
पत्र सूचना कार्यालय, नई दिल्ली

मुख्य सलाहकार संपादक
संतोष कुमार

वरिष्ठ सहायक सलाहकार संपादक
पवन कुमार

सहायक सलाहकार संपादक
अखिलेश कुमार
चन्दन कुमार चौधरी

भाषा संपादन
सुमित कुमार (अंग्रेजी)
रजनीश मिश्रा (अंग्रेजी)
नदीम अहमद (उर्दू)

सीनियर डिजाइनर
फूलचंद तिवारी

डिजाइनर
अभय गुप्ता
सत्यम सिंह

13 भाषाओं में उपलब्ध न्यू इंडिया समाचार को पढ़ने के लिए क्लिक करें।

https://newindiasamachar.pib.gov.in/news.aspx

न्यू इंडिया समाचार के पुराने अंक पढ़ने के लिए क्लिक करें

https://newindiasamachar.pib.gov.in/archive.aspx

न्यू इंडिया समाचार के बारे में लगातार अपडेट के लिए फॉलो करें: @NISPIBIndia

अंदर के पन्नों पर...

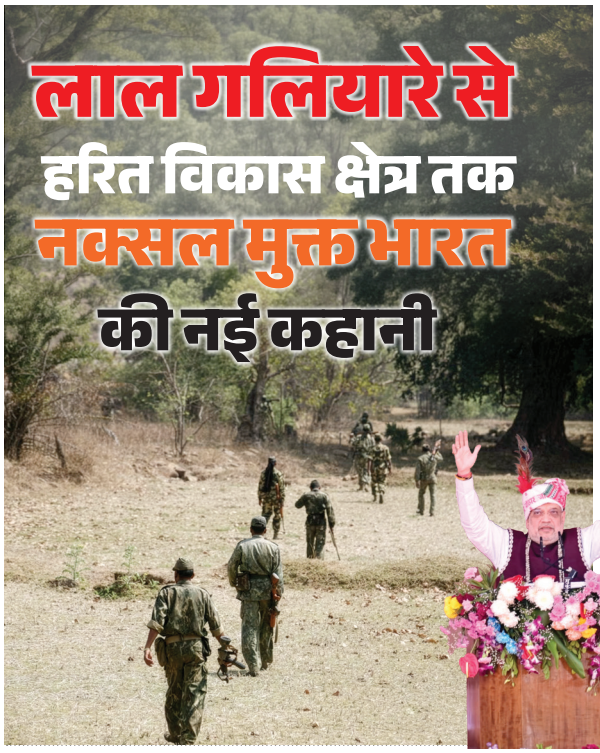

आवरण कथा

बीते 12 वर्षों में राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र में भारत नक्सलवाद और माओवादी हिंसा के खिलाफ निर्णायक दौर को पार कर चुका है। कानून की जीत हुई है। जो इलाके कभी 'रेड कॉरिडोर' कहलाते थे, वे विकास और 'ग्रीन ग्रोथ' के केंद्र बन चुके हैं। दशकों पुरानी इस समस्या को समयबद्ध तरीके से समाप्त करते हुए 31 मार्च 2026 को 'नक्सल मुक्त भारत' का संकल्प ऐतिहासिक उपलब्धि में बदल चुका है... | 12-24

नोएडा अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उत्तर प्रदेश के जेवर स्थित नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा के प्रथम चरण का किया उद्घाटन | 30-31

वैश्विक संकट पर पीएम मोदी

जनता का हित सर्वोपरि

संसद के दोनों सदनों में पीएम मोदी का संबोधन, बोले-चुनौतियों को अवसर में बदलने की क्षमता रखता है नया भारत | 37-39

समाचार सार | 4-5

व्यक्तित्व : दादा साहेब फाल्के
भारतीय सिनेमा में आत्मनिर्भरता लाने वाले दूरदृष्टा | 6

'लोक सेवक' विकसित भारत के शिल्पकार
21 अप्रैल को है 18वां सिविल सेवा दिवस | 7-11

राष्ट्रनीति नए भारत की राजनीति का आधार
प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने टीवी-9 समिट 2026 को किया संबोधित | 25-27

संशोधित उड़ान और भारत औद्योगिक विकास योजना को मंजूरी
केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय | 28-29

अवसर सृजित करने का महत्वपूर्ण साधन शिक्षा
अक्षय पात्र कार्यक्रम में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने किया भोजन वितरित | 32-33

सशक्त ग्रामीण, सशक्त पंचायत सतत विकास का मजबूत आधार
पंचायती राज दिवस और स्वामित्व के 6 वर्ष पर विशेष | 34-36

पश्चिम एशिया संकट से मिलकर निपटेगी 'टीम इंडिया'
पीएम मोदी ने युद्ध संकट की स्थिति पर मुख्यमंत्रियों के साथ की बैठक | 40-41

खेल क्रांति का मजबूत रोडमैप
फ्लैगशिप योजना खेलो इंडिया का एक दशक | 42-45

विश्व धरोहर में समाहित देश का सार
विश्व धरोहर दिवस पर विशेष सामग्री | 46-47

पूरी मानवता को मिलेगा भारत की एआई-सेमीकंडक्टर का लाभ
पीएम मोदी का गुजरात दौरा, 20 हजार करोड़ रुपये से अधिक की सौगातें | 48-50

प्रकाशक: कंचन प्रसाद, महानिदेशक, सीबीसी (केंद्रीय संचार ब्यूरो)। **पत्राचार और ईमेल के लिए पता:** कमरा संख्या-1077, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली- 110003. **ईमेल-** response-nis@pib.gov.in आर. एन. आई. नंबर DELHIN/2020/78812

संपादक की कलम से...

भारत से लाल आतंक का खात्मा

आदिवासी क्षेत्रों में अब होगा निर्बाध विकास

सादर नमस्कार

लाल आतंक की गिरफ्त से देश को मुक्त करने की जो मुहिम भारत सरकार ने छेड़ी थी, आज उसमें हमें सफलता मिली है। बारह राज्यों में फैले रेड कॉरिडोर में वर्षों से एक समानांतर तंत्र हिंसा का सहारा लेकर विकास को बाधित कर रहा था, क्षेत्र के युवाओं को गुमराह कर रहा था। आज केंद्र सरकार की स्पष्ट रणनीति और सतत प्रयासों से इन क्षेत्रों में एक नए युग का निर्माण हो रहा है। एक ऐसा युग जो विकसित एवं आत्मनिर्भर भारत की आकांक्षा से जुड़ा हुआ है।

नक्सलवाद से निपटने के लिए संवाद, सुरक्षा और समन्वय की त्रिस्तरीय रणनीति अपनाई गई जिसके परिणामस्वरूप वर्ष 2024 से मार्च 2026 तक 706 नक्सली मारे गए, 2,218 गिरफ्तार हुए और 4,839 ने आत्मसमर्पण किया। साथ ही शीर्ष स्तर के सभी केंद्रीय समिति और पोलित ब्यूरो सदस्य भी समाप्त हो चुके हैं। जहां एक ओर कठोर कार्रवाई से हिंसा पर नियंत्रण पाया गया, वहीं दूसरी ओर सड़क, दूरसंचार, शिक्षा, कौशल विकास और वित्तीय समावेशन जैसी पहलों से विकास को नई गति मिली है। आज वे क्षेत्र, जो कभी भय और असुरक्षा के प्रतीक थे, वहां स्थिरता, विश्वास और नई संभावनाओं के द्वार खुल चुके हैं। छत्तीसगढ़ का बस्तर इसका सशक्त उदाहरण बनकर उभरा है, जहां अब हर गांव तक स्कूल, खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों को पहुंचाने का अभियान चल रहा है। बस्तर ओलंपिक और बस्तर पंडुम जैसे आयोजन सामाजिक पुनर्निर्माण और आत्मविश्वास के प्रतीक बन चुके हैं। यह परिवर्तन केवल एक क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि उन सभी क्षेत्रों में स्पष्ट दिखाई दे रहा है, जो कभी लाल आतंक से प्रभावित थे। यह परिवर्तन विकसित भारत 2047 की दिशा में एक सशक्त आधार तैयार करता है, जहां हर क्षेत्र और हर नागरिक समान अवसरों के साथ आगे बढ़ सके। नक्सल मुक्त भारत का साकार हुआ सपना ही इस बार के हमारे अंक की आवरण कथा बनी है।

इसके अलावा व्यक्तित्व की कड़ी में दादा साहेब फाल्के, केंद्रीय मंत्रिमंडल के निर्णय, विश्व धरोहर दिवस, फ्लैगशिप में खेलो इंडिया योजना के एक दशक, 21 अप्रैल को 18वें सिविल सेवा दिवस, अक्षय पात्र के 5 अरबवें भोजन वितरण कार्यक्रम में राष्ट्रपति, पश्चिम एशिया में युद्ध की स्थिति पर संसद में संबोधन सहित प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पखवाड़े भर के कार्यक्रमों को इसमें शामिल किया गया है।

साथ ही, पत्रिका के इनसाइड पेज पर मन की बात और बैक कवर पर 22 अप्रैल को मनाए जाने वाले विश्व पृथ्वी दिवस पर विशेष सामग्री समाहित है।

आप अपना सुझाव हमें भेजते रहें।

(धीरेन्द्र ओझा)

हिंदी, अंग्रेजी व अन्य 11 भाषाओं में उपलब्ध पत्रिका पढ़ें/डाउनलोड करें।
https://newindiasamachar.pib.gov.in/news.aspx

आपकी बात...

सरकारी योजनाओं तथा पहलों से संबंधित सामग्री अत्यंत महत्वपूर्ण

मैं 'न्यू इंडिया समाचार' पत्रिका का नियमित पाठक हूं। मुझे इस पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न सरकारी योजनाओं तथा पहलों से संबंधित सामग्री अत्यंत तथ्यपरक और महत्वपूर्ण लगती है। पत्रिका छात्रों के लिए उपयोगी है और इसमें प्रकाशित आलेख सरल भाषा में होते हैं।

m.prashus91@gmail.com

विकास कार्य एवं योजना से अवगत हो रहे नागरिक

न्यू इंडिया समाचार पाक्षिक पत्रिका अच्छी और काम की जानकारी देने वाली है। हमारे स्कूल के स्टूडेंट्स और टीचर्स की तरफ से मैं इस पत्रिका की सराहना करता हूं। इससे नागरिक देश में हो रहे विकास कार्य एवं योजना से अवगत हो रहे हैं। अगर कोई पहली बार भी मुश्किल मुद्दों को पढ़ता है तो आसानी से समझ पाता है।

bharath417c@gmail.com

समुद्री भारत विजन 2030 का प्रमुख स्तंभ सागरमाला कार्यक्रम

न्यू इंडिया समाचार पत्रिका में सागरमाला कार्यक्रम पर स्टोरी पढ़ी। भारत का 95% व्यापार समुद्री मार्गों से होता है। सागरमाला कार्यक्रम ने 11 वर्षों में 280 परियोजनाएं पूरी कर पत्तनों और कनेक्टिविटी को नई शक्ति दी है। समुद्री भारत विजन 2030 और अमृतकाल विजन 2047 इसी शक्ति को और सुदृढ़ करेंगे।

संजीव सोना

हर अंक से कुछ नया सीखने को मिलता

न्यू इंडिया समाचार पत्रिका में मेरी गहरी रुचि है। इस पत्रिका के माध्यम से देश-विदेश में होने वाली सभी घटनाओं से अवगत होता हूं। हर अंक से कुछ नया सीखने को मिलता है। इसमें पूरे देश की सरकारी नीतियों और विकासात्मक गतिविधियों की जानकारी पढ़ने को मिलती है।

shaheedkharachiagp@gmail.com

पत्रिका, आंकड़े और तथ्यात्मक जानकारी करते हैं प्रदान

सबसे पहले मैं आपको और आपकी पूरी टीम को न्यू इंडिया समाचार पत्रिका की सफलता के लिए बधाई देता हूं। इस पत्रिका के आंकड़े और तथ्य बिल्कुल सटीक जानकारी प्रदान करते हैं। पत्रिका का सबसे अच्छा हिस्सा व्यक्तित्व श्रृंखला लगता है। लोगों और यूपीएससी परीक्षार्थियों को इस अद्भुत और जानकारीपूर्ण पत्रिका पढ़ने से लाभ मिल सकता है।

achintasuri1996@gmail.com

पत्राचार और ईमेल के लिए पता: कमरा संख्या-1077, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली- 110003

ईमेल- response-nis@pib.gov.in

समाचार सार

...ताकि गर्मी में न हो बिजली किल्लत

देश में बिजली की पर्याप्त उपलब्धता है। फरवरी, 2026 तक देश की स्थापित उत्पादन क्षमता 524 गीगावाट है। भारत ने अप्रैल, 2014 से 299.87 गीगावाट की नई उत्पादन क्षमता जोड़कर बिजली की कमी की गंभीर समस्या का समाधान किया है। इससे अब भारत बिजली की कमी वाले देश की जगह पर्याप्त बिजली वाला देश बन गया है। मध्य-पूर्व संकट के बावजूद अप्रैल से जून 2026 की गर्मियों में बिजली की मांग को पूरा करने के लिए वैकल्पिक स्रोत से बिजली उत्पादन के पर्याप्त इंतजाम किए गए हैं। कुछ नए पावर प्लांट की शुरुआत से लेकर निर्माणाधीन पावर प्लांट्स (थर्मल और हाइड्रो) का काम प्रगति पर हैं जिन्हें तय समय सीमा में पूरा कर लिया जाएगा। बिजली उत्पादक कंपनियों को दैनिक आधार पर पूर्ण उपलब्धता और उत्पादन बनाए रखने के निर्देश दिए गए हैं।

लगातार दूसरे वर्ष एक अरब टन कोयला उत्पादन की उपलब्धि हासिल

कोयला क्षेत्र में निरंतर और समन्वित प्रयासों से देश ने लगातार दूसरे वर्ष 20 मार्च को 1 अरब टन कोयले के उत्पादन की उपलब्धि प्राप्त की। यह महत्वपूर्ण उपलब्धि ऊर्जा क्षेत्र में भारत की बढ़ती आत्मनिर्भरता और प्रमुख उद्योगों को निर्बाध ईंधन आपूर्ति सुनिश्चित करने की दिशा में मजबूत कदम है। कोयले के उत्पादन में निरंतर वृद्धि ने देश की बढ़ती ऊर्जा मांगों को प्रभावी ढंग से पूरा करने में सक्षम बनाया है। साथ ही बिजली क्षेत्र को कोयला आधारित तापीय विद्युत संयंत्रों में रिकॉर्ड कोयला भंडार बनाए रखने में भी सहायता प्रदान की है। यह उपलब्धि सुदृढ़ योजना, कुशल क्रियान्वयन और कोयला मूल्य श्रृंखला में मजबूत समन्वय की वजह से संभव हो पाया है।

गुजरात के कच्छ में पैदा हुआ ग्रेट इंडियन बस्टर्ड का चूजा

वन्यजीव संरक्षण के क्षेत्र में देश में एक बड़ी सफलता सामने आई है। 'ग्रेट इंडियन बस्टर्ड' (जीआईबी) का एक चूजा गुजरात के कच्छ में लगभग एक दशक बाद जन्मा है। यह उपलब्धि जंपस्टार्ट अप्रोच नामक एक नवीन संरक्षण उपाय के माध्यम से संभव हो पाया है क्योंकि गुजरात के कच्छ के घास के मैदान में केवल तीन मादा जीआईबी हैं, वहां कोई नर नहीं बचा है। इस पहल के लिए राजस्थान के प्रजनन केंद्र से एक अंडा 770 किमी की दूरी तय करके गुजरात के घोंसले तक पहुंचाया गया। देश में जीआईबी जंपस्टार्ट अप्रोच की यह पहली अंतरराज्यीय पहल है, जिसे गुजरात में सफलतापूर्वक पूरा किया गया है। प्रोजेक्ट जीआईबी की परिकल्पना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्ष 2011 में गुजरात सहित इसके प्राकृतिक आवासों में ग्रेट इंडियन बस्टर्ड के संरक्षण के लिए की थी। औपचारिक रूप से इसे वर्ष 2016 में लॉन्च किया गया था।

रेलवे कंफर्म टिकट कैंसिलेशन नियमों में बदलाव

भारतीय रेलवे ने कंफर्म टिकट कैंसिलेशन नियमों में कई बदलाव किए हैं। ट्रेन प्रस्थान से 48, 12 और 4 घंटे पहले टिकट रद्द करने की पुरानी समय-सीमा को बदलकर अब 72, 24 और 8 घंटे कर दिया गया है। यह बदलाव आरक्षण चार्ट तैयार करने की प्रक्रिया के अनुरूप किया गया है, जो अब प्रस्थान से 9 से 18 घंटे पहले तैयार किया जाता है। रेलवे के इस नए नियम से प्रतीक्षा सूची वाले यात्रियों को सीधा लाभ मिलेगा। अगर कोई व्यक्ति कंफर्म टिकट 24-72 घंटे पहले कैंसिल करता या करवाता है तो 25% किराया कटेगा। 8-24 घंटे के बीच कैंसिल कराता है तो 50% कटौती और 8 घंटे से कम समय पर रिफंड नहीं मिलेगा।

रेलवे के नए प्रावधान के तहत अब यात्री प्रस्थान से 30 मिनट पहले तक अपनी यात्रा की श्रेणी (क्लास) को अपग्रेड कर सकेंगे, जबकि पहले यह बदलाव केवल चार्ट तैयार होने से पहले तक ही संभव था। रेल, सूचना एवं प्रसारण और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा है कि इन बदलावों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि टिकट असली यात्रियों को ही मिले। इसके लिए करीब 3 करोड़ संदिग्ध अकाउंट भी बंद किए गए हैं। रेल मंत्री ने यह भी कहा है कि अब देश के किसी भी रेलवे स्टेशन से काउंटर टिकट रद्द किए जा सकेंगे।

आदिवासियों द्वारा तैयार उत्पादों को ई-कॉमर्स पर बढ़ावा

आदिवासी कारीगरों को सशक्त बनाने और स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देने की दिशा में डाक विभाग ने जनजातीय कार्य मंत्रालय के अधीन ट्राइबल कोऑपरेटिव मार्केटिंग डेवलपमेंट फेडरेशन ऑफ इंडिया (ट्राइफेड) के साथ एक समझौता किया है। समझौते के तहत, डाक विभाग ट्राइफेड के ऑनलाइन चैनलों के माध्यम से रखे गए सभी ई-कॉमर्स ऑर्डर के लिए एंड-टू-एंड लॉजिस्टिक्स समाधान प्रदान करेगा। इससे आदिवासी कारीगरों और उद्यमियों के लिए बाजार पहुंच को मजबूती मिलेगी। यह साझेदारी आदिवासी आजीविका एवं डिजिटल अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देगी। साथ ही, इससे आदिवासी समुदाय के आय में भी बढ़ोतरी होगी।

50 मिलियन टन लौह अयस्क उत्पादन कर रचा इतिहास

भारत की सबसे बड़ी लौह अयस्क उत्पादक और नवरत्न सीपीएसई एनएमडीसी लिमिटेड ने एक वित्तीय वर्ष में 50 मिलियन टन लौह अयस्क का उत्पादन करने वाली देश की पहली खनन कंपनी बनकर इतिहास रच दिया है। वर्ष 2015 के बाद उत्पादन में लगभग दो तिहाई की वृद्धि हुई है, जो 30 मिलियन टन से बढ़कर 50 मिलियन टन हो गई है। इसमें पिछले चार वर्षों में ही वर्तमान क्षमता का लगभग पांचवां हिस्सा जोड़ा गया है। भारत 2030 तक इस्पात निर्माण क्षमता को 300 मिलियन टन तक बढ़ाने के अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है। ■

दादा साहेब फाल्के...

भारतीय सिनेमा में आत्मनिर्भरता लाने वाले दूरदृष्टा

भारतीय सिनेमा के क्षेत्र में 'आत्मनिर्भरता' और 'मेक इन इंडिया' का प्रसार करने वाले दादा साहेब फाल्के ऐसे दूरदर्शी व्यक्ति थे जिन्हें भारतीय सिनेमा का जन्मदाता कहा जाता है। बचपन से ही कला के प्रति समर्पण भाव रखने वाले फाल्के ने अपनी फिल्मों में हमेशा स्थानीय कलाकारों का इस्तेमाल किया। स्वदेशी रूप से उपलब्ध साइट और टेक्नोलॉजी को बढ़ावा दिया। उनकी देशभक्ति, भारतीय फिल्म के प्रति उनका जुनून, दूरदर्शिता और विरासत आज भी दुनिया भर के कहानीकारों और फिल्म बनाने वालों को करती है प्रेरित...

जन्म
30 अप्रैल 1870

मृत्यु
16 फरवरी 1944

एक ऐसे व्यक्ति जिसके पास न तो धन था, न कोई बीमा पॉलिसी। ऐसे में उन्होंने पत्नी के गहने बेचे और फिल्म निर्माण के लिए सब कुछ खरीदा। उस इंसान ने न सिर्फ फिल्में बनाईं बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए राह भी तैयार की। यह व्यक्ति कोई और नहीं बल्कि दादा साहेब फाल्के थे जिन्होंने भारत के लोगों को सिनेमाई अनुभव की सुंदरता से परिचित कराया। दुनिया में सबसे बड़े मनोरंजन उद्योग के रूप में विकसित होने का मार्ग प्रशस्त किया। पटकथा लेखन, फिल्म निर्माण, निर्देशन सहित विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले दादा साहेब फाल्के को भारतीय सिनेमा का जनक माना जाता है जिन्होंने पहली भारतीय फीचर फिल्म राजा हरिश्चंद्र के साथ भारतीय सिनेमा की जादुई दुनिया की नींव रखी।

महाराष्ट्र में नासिक के निकट त्र्यंबकेश्वर में 30 अप्रैल 1870 को जन्मे दादा साहेब का पूरा नाम धुंडीराज गोविंद फाल्के था। 'द लाइफ ऑफ क्राइस्ट' फिल्म देखने के बाद उन्हें फिल्म बनाने की प्रेरणा मिली। ऐसे में उन्होंने 1912 में फाल्के फिल्म कंपनी की स्थापना की। उन्होंने 3 मई 1913 को बंबई के कोरोनेशन थियेटर में अपनी पहली मूक फिल्म राजा हरिश्चंद्र का प्रदर्शन किया। जिसके बाद से ही देश में फीचर फिल्मों का चलन बढ़ने लगा।

उन्होंने उस दौर में फिल्मों में तमाम नए प्रयोग किए और फिर साल 1917 में महाराष्ट्र के नासिक में 'हिंदुस्तान फिल्म' कंपनी की नींव रखी। 19 सालों के सफर में उन्होंने कई फिल्मों का निर्माण किया जिसमें 95 फीचर फिल्में और 27 शार्ट फिल्में शामिल हैं। राजा हरिश्चंद्र के अलावा मोहिनी भस्मासुर, सत्यवान सावित्री, लंका दहन, श्री कृष्ण जन्म और कालिया मर्दन दादा साहेब फाल्के की प्रसिद्ध फिल्म हैं। उनकी बनाई मोहिनी भस्मासुर पहली फिल्म है जिसमें महिला कलाकारों ने अभिनय किया जबकि 1917 में बनी लंका दहन में किसी अभिनेता का डबल रोल देखने को मिला। 1932 में बनी सेतु बंधन उनकी अंतिम मूक फिल्म थी जबकि उन्होंने एकमात्र बोलती फिल्म गंगावतरण का निर्माण किया। दादा साहेब फाल्के का नाम भारतीय सिनेमा के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। 16 फरवरी 1944 को उनका निधन हो गया।

भारतीय सिनेमा में उत्कृष्ट योगदान और उपलब्धियों के लिए फिल्म का सर्वोच्च पुरस्कार, दादा साहेब फाल्के पुरस्कार प्रदान किया जाता है। इस पुरस्कार की शुरुआत दादा साहेब की जन्म शताब्दी वर्ष 1969 से हुई थी। 1 मई 2025 को वेव्स शिखर सम्मेलन में भारत के समृद्ध सिनेमाई इतिहास पर विचार करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दादा साहेब फाल्के को याद किया था। उन्होंने कहा था कि 3 मई, 1913 को भारत की पहली फीचर फिल्म राजा हरिश्चंद्र रिलीज हुई थी जिसका निर्देशन अग्रणी फिल्म निर्माता दादा साहेब फाल्के ने किया था।

21 अप्रैल 2026 : 18वां सिविल सेवा दिवस

लोक सेवक विकसित भारत के शिल्पकार

शासन की गुणवत्ता इस बात से निर्धारित होती है कि योजनाएं लोगों तक किस हद तक पहुंचती हैं। उनका जमीनी स्तर पर वास्तविक प्रभाव क्या है। सिविल सेवा इस काम की रीढ़ है...और इसीलिए सरदार वल्लभ भाई पटेल ने सिविल सेवकों को देश के स्टील फ्रेम की संज्ञा दी थी। सार्वजनिक सेवा, नीति निर्माण और उसके क्रियान्वयन में सिविल सेवकों की भूमिका को याद करने के लिए हर साल 21 अप्रैल को सिविल सेवा दिवस मनाया जाता है। इस साल राष्ट्र मना रहा है 18वां सिविल सेवा दिवस...

सुशासन सुनिश्चित करना हो या योजनाओं और नीतियों को लागू करना, सिविल सेवकों ने पूरी निष्ठा एवं समर्पण के साथ राष्ट्र की सेवा की है। खासकर ऐसे समय में जब देश विकसित भारत का संकल्प लेकर आगे बढ़ रहा है, सिविल सेवकों के उत्तरदायित्व और अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं। सिविल सेवकों के इन्हीं उत्तरदायित्व और विकसित भारत के संकल्प पथ पर उनकी भूमिका का जिक्र कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नागरिक देवो भवः का मंत्र दिया है। 21 अप्रैल 1947 को प्रशासनिक सेवा अधिकारियों के पहले बैच को संबोधित करते हुए सरदार पटेल ने सिविल सर्वेंट्स को देश का स्टील फ्रेम कहा था। उन अफसरों को 'लौह पुरुष' सरदार पटेल की सलाह थी कि देश के नागरिकों की सेवा अब आपका सर्वोच्च कर्तव्य है। उन्होंने स्वतंत्र भारत की ब्यूरोक्रेसी की नई मर्यादाएं तय की थीं। एक ऐसा सिविल सर्वेंट, जो राष्ट्र की सेवा को अपना सर्वोत्तम कर्तव्य माने। जो लोकतांत्रिक तरीके से प्रशासन चलाए और ईमानदारी, अनुशासन एवं समर्पण से भरा हुआ हो। आज जब देश विकसित भारत बनाने के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है, तो सरदार वल्लभभाई पटेल की ये बातें और ज्यादा प्रासंगिक हो जाती है। यही कारण है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कहते हैं कि एक दौर ऐसा था जब ब्यूरोक्रेसी की भूमिका एक रेगुलेटर की होती थी, जो औद्योगीकरण और उद्यमिता की गति को नियंत्रित करती थी। इस सोच से भी देश आगे निकल चुका है। आज हम ऐसा वातावरण तैयार कर रहे हैं, जो नागरिकों में उद्योग को प्रमोट करे और उन्हें हर बाधा को पार करने में मदद दे। इसलिए सिविल सर्विस को सक्षम बनना होगा। सिर्फ नियम पुस्तिका के संरक्षक के रूप में ही नहीं, बल्कि विकास के सूत्रधार के रूप में अपना विस्तार करना होगा।

नए भारत के शिल्पकार

एक समय था, जब सिविल सेवा में आने वालों का सपना होता था कि वह सिविल सर्वेंट के रूप में आगे बढ़े। लेकिन अब समय बदल चुका है। प्रधानमंत्री मोदी कहते हैं कि मैं जिन सपनों को हिंदुस्तान के 140 करोड़ देशवासियों की आंखों में देख रहा हूं और इसलिए मैं अब कह रहा हूं कि आप सिर्फ सिविल सर्वेंट नहीं हैं, आप नए भारत के शिल्पकार हैं। शिल्पकार के उस दायित्व को निभाने के लिए स्वयं को सक्षम बनाएं। हर सामान्य व्यक्ति के सपनों को खुद के सपने बनाकर जिएं। विकसित भारत का यही हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

सरकार ने ब्यूरोक्रेसी को दिलाई बंधन से मुक्ति

बीते वर्षों में सरकार ने ब्यूरोक्रेसी को बंधन से मुक्ति दिलाई है। ये बंधन है- प्रोटोकॉल और पदानुक्रम का बंधन। आप जानते हैं कि पदानुक्रम के बंधनों को तोड़ने की शुरुआत भी पीएम मोदी ने खुद की। वह लगातार सेक्रेटरी से लेकर असिस्टेंट सेक्रेटरी तक से मिलते रहते हैं। वह ट्रेनी ऑफिसर्स के साथ मुलाकात करते हैं। उन्होंने विभाग के भीतर हर किसी की भागीदारी बढ़ाने और नए विचारों के लिए केंद्र सरकार में भी चिंतन शिविर को बढ़ावा दिया है। उनके प्रयासों से एक और बड़ा बदलाव आया। पहले वर्षों तक राज्यों में रहने के बाद ही अधिकारियों को प्रतिनियुक्ति पर केंद्र सरकार में काम करने का अनुभव मिलता था। ये किसी ने नहीं सोचा कि अगर इन अधिकारियों के पास केंद्र सरकार में काम का अनुभव ही नहीं होगा तो वो केंद्र के कार्यक्रमों को जमीन पर लागू कैसे करेंगे? ऐसे में उन्होंने सहायक सचिव कार्यक्रम के जरिए इस गैप को भी भरने का प्रयास किया। अब युवा आईएएस को अपने कैरियर की शुरुआत में ही केंद्र सरकार में काम करने, उसका अनुभव लेने का मौका मिलता है।

तकनीकी क्रांति के लिए तैयार हों सिविल सेवक

सिविल सेवकों को ऐसे कौशल हासिल करने चाहिए जो न केवल उन्हें प्रौद्योगिकी को समझने में मदद करे बल्कि स्मार्ट और समावेशी शासन के लिए भी सक्षम बनाए। प्रौद्योगिकी के युग में शासन का मतलब प्रणाली का प्रबंधन करना ही नहीं, बल्कि संभावनाओं को कई गुना बढ़ाना भी होता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और क्वांटम फिजिक्स में तेजी से हो रही प्रगति को समझने के लिए सिविल सेवकों को तकनीकी क्रांति के लिए तैयार रहने की जरूरत है।

सुशासन से जगा विश्वास

- अपने दस्तावेजों की प्रमाणिकता की पुष्टि के लिए पहले राजपत्रित अधिकारी के पास जाना होता था लेकिन वर्तमान केंद्र सरकार ने स्वयं को यह अधिकार दिया कि दस्तावेजों की प्रमाणिकता की पुष्टि करें।
- एक जनवरी 2016 से सरकारी नौकरियों में ग्रुप सी और ग्रुप बी श्रेणी के सभी गैर-राजपत्रित पदों पर भर्ती के लिए साक्षात्कार को समाप्त करने का निर्णय लिया गया।
- शिकायतों के निपटारे में पहले औसतन 62 दिन लगते थे तो अब 13 दिन लग रहे हैं। बड़ी संख्या में 5 से 6 दिन में भी शिकायतों का निपटारा हो रहा है।

राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस मनाने का उद्देश्य

- सिविल सेवा अधिकारियों के कार्य और प्रयासों को प्रेरित करना और उनकी सराहना करना।
- केंद्र सरकार इस अवसर का उपयोग सिविल सेवाओं के तहत विभिन्न विभागों के काम का मूल्यांकन करने के लिए करती है।
- केंद्र सरकार सबसे अच्छा काम करने वाले व्यक्तियों और समूहों को पुरस्कार देती है।
- इस दिन केंद्र और राज्य सरकारों के अधिकारियों को भारत के प्रधानमंत्री द्वारा लोक प्रशासन के क्षेत्र में उनकी असाधारण सेवाओं के लिए सम्मानित किया जाता है।

सिविल सर्वेंट के रिफॉर्म को पुनर्कल्पना करने का वक्त

यह समय सिविल सेवाओं में सुधारों की पुनर्कल्पना करने का है। हमें सुधारों की गति भी बढ़ानी है और उसका दायरा भी बढ़ाना है। इंफ्रास्ट्रक्चर हो या रिन्यूएबल एनर्जी का लक्ष्य, इंटरनल सिक्योरिटी हो या भ्रष्टाचार खत्म करने का लक्ष्य, सोशल वेलफेयर की योजनाएं हों या ओलंपिक-खेल से जुड़े लक्ष्य, हर सेक्टर में देश को नए रिफॉर्म करने हैं। पीएम मोदी का मानना है कि अब तक जितना हासिल किया है, अब उससे भी कई गुना ज्यादा हासिल करके दिखाना है। इन सबके बीच हम सबको हमेशा-हमेशा एक बात याद रखनी है, दुनिया कितनी भी ज्यादा टेक्नोलॉजी-चालित क्यों न हो जाए, हमें मानवीय विवेक के महत्व को कभी नहीं भूलना चाहिए। संवेदनशील रहिए, गरीब की आवाज सुनिए, गरीब की तकलीफ समझिए, उनका समाधान करना अपनी प्राथमिकता बनाइए, जैसे अतिथि देवो भवः होता है, वैसे ही नागरिक देवो भवः इस मंत्र को लेकर चलना है। आपको सिर्फ भारत के सिविल सर्वेंट के रूप में ही नहीं, अपने आपको विकसित भारत के शिल्पकार के रूप में दायित्व के लिए तैयार करना है।

सरकार ने भूमिका आधारित एप्रोच पर बहुत जोर दिया है

- सिविल सर्विसेस में क्षमता और सामर्थ्य निर्माण के लिए नया आर्किटेक्चर खड़ा हुआ है।
- सीखने के तौर-तरीके का लोकतंत्रीकरण हुआ है।
- हर ऑफिसर के लिए उसकी क्षमता और अपेक्षा के हिसाब से उसका दायित्व भी तय हो रहा है।

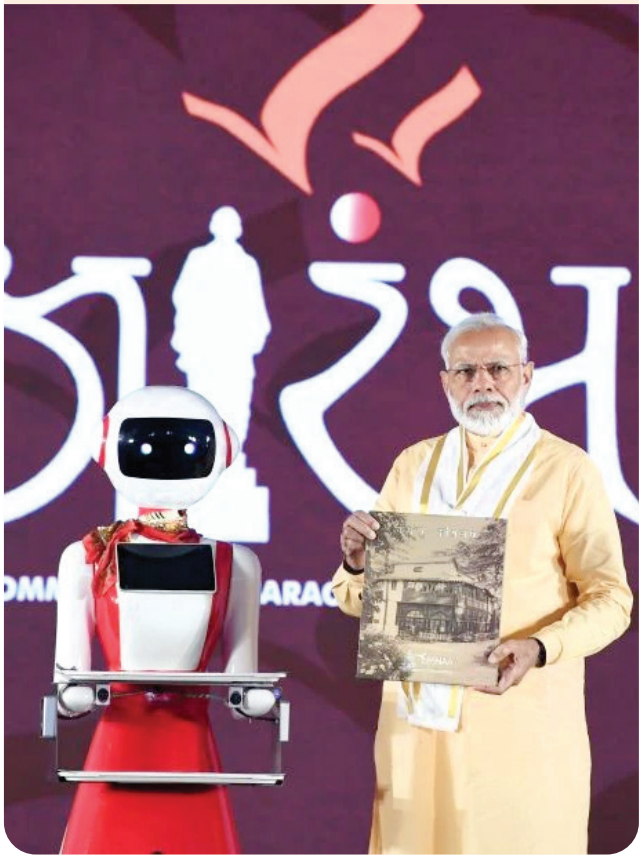

अब सिविल सर्विस को समकालीन चुनौतियों के हिसाब से खुद को तैयार करना होगा, तभी वो प्रासंगिक बनी रह सकती हैं। हमें खुद के लिए नई-नई कसौटियां भी नित्य बनाते रहना होगा और हर कसौटी को पार करते रहना होगा। सफलता की सबसे बड़ी कुंजी यही है कि खुद को चुनौती देते रहो।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

सुशासन ही कुंजी

बीते कुछ वर्षों या कहें पिछले दशक में देश की सिविल सेवा से जुड़े युवाओं से पीएम मोदी कहते हैं कि आप भी जानते हैं कि जीवन जीने के दो तरीके होते हैं। पहला है 'काम पूरा करना', दूसरा है 'चीजों को होने देना' पहला सक्रिय रवैया और दूसरा निष्क्रिय रवैया का प्रतिबिंब है। पहले तरीके से जीने वाले व्यक्ति की सोच होती है कि हां, बदलाव आ सकता है। दूसरे तरीके में विश्वास करने वाला व्यक्ति कहता है, ठीक है, रहने दो, सब ऐसे ही चलता है। पहले से भी चलता आया है, आगे भी चलता रहेगा, वो तो अपने आप हो जाएगा, ठीक हो जाएगा। 'काम पूरा करने' में यकीन रखने वाले आगे बढ़कर जिम्मेदारी लेते हैं। जब उन्हें टीम में काम करने का अवसर मिलता है तो वो हर काम का ड्राइविंग फोर्स बन जाते हैं। लोगों के जीवन में बदलाव लाने की ऐसी ज्वलंत इच्छा से ही आप एक ऐसी विरासत छोड़ जाएंगे, जिसे लोग याद करेंगे। आपको यह भी याद रखना होगा कि एक अफसर के रूप में आपकी सफलता इस बात से नहीं आंकी जाएगी कि आपने अपने लिए क्या हासिल किया। आपकी सफलता का आकलन इस बात से होगा कि आपके काम से, आपके करियर से दूसरों का जीवन कितना बदला है। जिनका जीवन बदलने की जिम्मेदारी आपके पास

पीएम मोदी का शासन मंत्र

नागरिक देवो भव:

21वीं सदी के इस कालखंड में तेजी से बदलती व्यवस्थाओं के बीच भारत तेज रफ्तार से आगे बढ़ रहा है। नई व्यवस्था के अनुरूप भारत की सिविल सर्विस को भी निरंतर अपडेट किया गया है। इसी कड़ी में 2-8 अप्रैल तक कर्मयोगी साधना सप्ताह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोक सेवकों से शासन के मूल मंत्र-नागरिक देवो भव: का उल्लेख करते हुए कहा कि सामान्य मानवी के लिए स्थानीय कार्यालय ही होता है सरकार का चेहरा...

पीएम मोदी का लोक सेवकों को मंत्र

- हमारी गवर्नेंस ऐसी हो कि देश के नागरिकों की ईज ऑफ लिविंग, क्वालिटी ऑफ लाइफ दिनों-दिन बेहतर होनी चाहिए।
- हर दिन नया सीखने की जरूरत है, आपको कर्मयोगी की भावना में खुद को ढालने की जरूरत है।
- प्रशासनिक सेवाओं में सुधार और बदलाव का मतलब-पब्लिक सर्वेंट के व्यवहार में बदलाव।
- सफलता का एक बड़ा सिद्धांत-दूसरों की लकीर छोटी करने के बजाय, अपनी लकीर बड़ी करो। पुरानी व्यवस्था में जोर अधिकारी होने पर ज्यादा होता था, आज कर्तव्य भावना पर ज्यादा है।
- पद नहीं, कार्य का महत्व बढ़े। हर फैसले से पहले, सोचें कि ड्यूटी क्या कहती है- फैसले का इंपैक्ट कई गुना बढ़ जाएगा।
- प्रयासों को बड़े कैनवास पर देखें - 2047, विकसित भारत, यही लक्ष्य है। सोचें - जो काम कर रहे हैं, इसका असर देश की विकास यात्रा पर क्या होगा?
- हमारा एक व्यक्तिगत ट्रांसफॉर्मेशन कैसे संस्थागत ट्रांसफॉर्मेशन बन सकता है।
- ऐसा करने के लिए बहुत ऊर्जा चाहिए होती है, ये ऊर्जा केवल सेवा भाव से मिल सकती है।

प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

बेहतर प्रशासन के लिए तकनीक

- जब हम लर्निंग की बात करते हैं, तो आज के परिप्रेक्ष्य में टेक्नोलॉजी का महत्व बहुत बढ़ जाता है।
- बीते 11 वर्षों में शासकीय और प्रशासकीय कामों में गवर्नेंस और डिलीवरी से लेकर इकोनॉमी तक, तकनीकी क्रांति की ताकत देखी है।
- अब एआई की दस्तक के बाद ये बदलाव और तेज होने वाला है। इसलिए, टेक्नोलॉजी को समझना और उसका सही उपयोग करना, ये पब्लिक सर्विस का एक जरूरी हिस्सा बन चुका है।
- अब बेहतर एडमिनिस्ट्रेशन, बेहतर पब्लिक सर्वेंट वही होगा, जिसे टेक्नोलॉजी और डेटा की समझ होगी।
- यही आपके डिसीजन मेकिंग का आधार बनेगा। इसलिए, एआई के क्षेत्र में क्षमता निर्माण और निरंतर लर्निंग को बढ़ावा दिया जा रहा है।

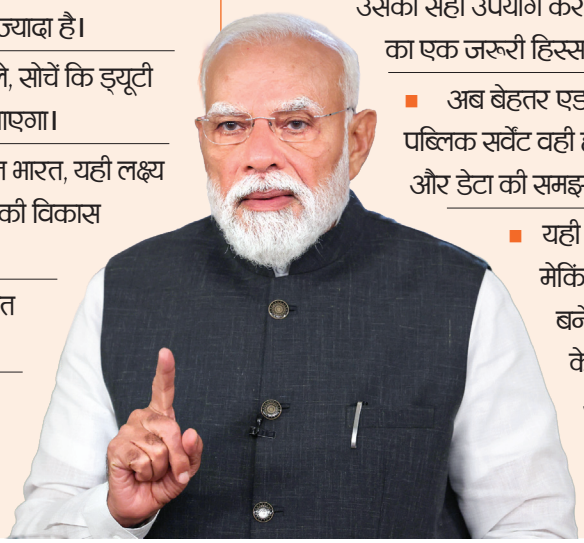

थी, वे लोग आपके बारे में क्या सोचते हैं? इसलिए आपको ये हमेशा याद रखना है- सुशासन ही कुंजी है।

संकल्पों का दिवस है सिविल सर्विस डे

सिविल सर्विस डे केवल वार्षिक परंपरा नहीं बल्कि यह दिवस संकल्पों का समय है। यह दिन निर्णयों को निर्धारित समय में कार्यान्वित करने का उत्साह और ऊर्जा से भरने का अवसर है। पीएम मोदी का मानना है कि इस अवसर से एक नई ऊर्जा, नई प्रेरणा, नई शक्ति, नया सामर्थ्य, नया संकल्प ले करके चलेंगे, तो जिन सिद्धियों को प्राप्त करना चाहते हैं उन सिद्धियों को हम खुद छू करके देखेंगे। उनका कहना है कि क्षमता निर्माण हर पल हमारी कोशिश रहनी चाहिए खुद के लिए भी, साथियों के लिए भी और व्यवस्था के लिए भी। ■

लाल गलियारे से हरित विकास क्षेत्र तक नक्सल मुक्त भारत की नई कहानी

भारत नक्सलवाद और माओवादी हिंसा के खिलाफ निर्णायक दौर को पार कर चुका है। बीते 12 वर्षों में राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र में यह एक बड़ी और महत्वपूर्ण सफलता के रूप में स्थापित हुआ है। देश नक्सलवाद की पकड़ से बाहर आकर राहत की सांस ले चुका है। बम और बंदूक की जगह संविधान और कानून की ताकत की जीत हुई है। कभी जो इलाके 'रेड कॉरिडोर' कहलाते थे, वे विकास और 'ग्रीन ग्रोथ' के केंद्र बन चुके हैं। डर और अंधकार पर विकास का उदय हुआ है। दशकों पुरानी इस समस्या को समयबद्ध तरीके से समाप्त करते हुए 31 मार्च 2026 को 'नक्सल मुक्त भारत' का संकल्प ऐतिहासिक उपलब्धि में बदल चुका है, जो देश के लिए बना गर्व का क्षण...

जहां कभी गोलियों की गूंज थी, वहां अब विकास के गीत हैं।
जहां खौफ की रातें थीं, वहां अब उम्मीदों की किरणें हैं।
जहां जंगलों में सन्नाटा था, वहां आज जीवन मुस्कुरा रहा है।
भारत आज अपने साहस और संकल्प से नया इतिहास रच रहा है।

30 मार्च 2026 को संसद में गूंजी यह पंक्तियां भारत में नक्सलवाद के खात्मे और नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में बदलाव की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है। जहां कभी बंदूकें थीं, वहां आज रोजगार है, जहां डर व अंधकार था, वहां आज विकास का उदय हो रहा है। यह विकास, सुरक्षा और आकांक्षाओं से भरे एक नए युग का वर्णन है, जहां हिंसा की जगह प्रगति ने ले ली है। यह द्योतक है कि जब नीति, नीयत और नेतृत्व एक साथ काम करते हैं तो असंभव भी संभव हो जाता है।

अक्सर कुछ तारीख, कुछ पल ऐसे होते हैं, जो सदैव इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों में अंकित हो जाते हैं। ऐसी ही एक तारीख बनी है 31 मार्च 2026 की। अभी तक 31 मार्च वित्तीय वर्ष के समापन का आखिरी दिन तो दुनिया के संदर्भ में एफिल टावर के उद्घाटन और अमेरिका में पहली बार अश्वेत के वोट डालने के लिए स्मरण किया जाता है। लेकिन अब यह तारीख नक्सल मुक्त भारत के उद्घोष और सामाजिक-आर्थिक विकास के प्रतीक के तौर पर भी याद किया जाएगा। भारत के नक्सल मुक्त होने की निर्धारित तारीख 31 मार्च से ठीक एक दिन पहले केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने लोकतंत्र के सर्वोच्च मंदिर से इस संकल्प की सिद्धि का उद्घोष किया। इसके साथ ही, जो क्षेत्र लाल आतंक के कारण विकास से दूर रह रह गए थे, वह अब विकास की नई यात्रा की शुरुआत के साक्षी बनेंगे।

कई दशक पुरानी नक्सल समस्या एक हिंसक विचारधारा थी, जिसने आदिवासी क्षेत्रों में विकास को रोके रखा था। हिंसा

को बढ़ावा दिया था। केंद्र सरकार की सख्त और स्पष्ट नीति ने इस समस्या का अंत कर दिया। 31 मार्च 2026 इतिहास की ऐसी तारीख बन गई है, जिसे दशकों पुरानी समस्या को जड़ से समाप्त करने के लिए सदियों तक याद किया जाएगा। केंद्र सरकार ने बहुआयामी रणनीति के तहत मजबूत सुरक्षा अभियान, तेज विकास कार्य और सहानुभूतिपूर्ण समर्पण की नीति पर काम किया। सरकार के इन प्रयासों ने नक्सली ढांचे और कैडर को खत्म करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

दरअसल, जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश की कमान संभाली तब देश की आंतरिक सुरक्षा तीन बड़े संवेदनशील क्षेत्रों-जम्मू-कश्मीर, पूर्वोत्तर और वामपंथी उग्रवाद प्रभावित कॉरिडोर से गंभीर रूप से प्रभावित थी। लगभग 4-5 दशकों में हजारों लोग इन तीनों जगहों पर पनपी और फैली अशांति के कारण जान गंवा चुके थे एवं संपत्ति का बहुत नुकसान हुआ था। देश के बजट का बहुत बड़ा हिस्सा गरीबों के विकास की जगह इन हॉटस्पॉट को संभालने में खर्च होता था। सुरक्षा बलों की भी जान हानि होती थी लेकिन 2014 के बाद इन तीनों हॉटस्पॉट पर ध्यान केंद्रित किया गया। स्पष्ट दीर्घकालीन रणनीति के आधार पर काम हुआ।

नक्सलवाद की शुरुआत और रेड कॉरिडोर

नक्सलवाद की शुरुआत 1967 में पश्चिम बंगाल के नक्सलबाड़ी आंदोलन से हुई। यह 'लाल गलियारे' में फैल गया, जिससे छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा, महाराष्ट्र, केरल, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश-आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के कुछ हिस्से प्रभावित हुए। 1971 में स्वतंत्र भारत के इतिहास में सबसे ज्यादा 3,620 हिंसक घटनाएं हुईं। इसके बाद 80 के दशक में पीपल्स वॉर ग्रुप ने इन राज्यों में अपना और विस्तार किया। इस दशक के बाद वामपंथी गुटों ने एक दूसरे में विलय की शुरुआत की और 2004 में प्रमुख सीपीआई (माओवादी) गुट का गठन हुआ। नक्सली हिंसा ने बहुत गंभीर स्वरूप ले लिया। पशुपति से तिरुपति कॉरिडोर को रेड कॉरिडोर के रूप में जाना जाता था। देश के भूभाग का 17 प्रतिशत हिस्सा रेड कॉरिडोर में समाहित था और इस समस्या से 12 करोड़ की आबादी प्रभावित थी, जो वर्षों तक गरीबी में जीवन बिताने को मजबूर हुए। उस वक्त की आबादी का 10 प्रतिशत हिस्सा नक्सलवाद का दंश झेल कर अपना जीवन बिता रहा था। इसकी तुलना में दो अन्य हॉटस्पॉट-कश्मीर में 1 प्रतिशत भूभाग आतंकवाद और पूर्वोत्तर में देश का 3.3 प्रतिशत भूभाग अशांति से ग्रस्त था। ऐसे में 2014 से प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने संवाद, सुरक्षा और

यह सच है कि माओवादी हिंसा ने मध्य और पूर्वी भारत के कई जिलों की प्रगति को रोक दिया था। इसीलिए 2015 में हमारी सरकार ने माओवादी हिंसा को खत्म करने के लिए एक व्यापक 'राष्ट्रीय नीति और कार्य योजना' तैयार की। हिंसा के प्रति शून्य सहिष्णुता के साथ-साथ, हमने इन क्षेत्रों में गरीब लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए बुनियादी ढांचे और सामाजिक सशक्तीकरण को बढ़ावा देने पर भी ध्यान केंद्रित किया है।

– नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

लाल गलियारे से नक्सल-मुक्त भारत तक (2014-2026)

केंद्र सरकार की सुरक्षा केंद्रित रणनीति, इंफ्रास्ट्रक्चर, नक्सल फाइनेंशियल नेटवर्क पर प्रहार व आत्मसमर्पण नीति के सकारात्मक परिणाम आए। वामपंथी उग्रवाद (एलडब्ल्यूई), जिसे नक्सलवाद के रूप में जाना जाता है, भारत की सबसे गंभीर आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों में से एक थी। इन चुनौतियों को केंद्र और प्रभावित राज्य सरकारों की मदद से नक्सल मुक्त घोषित कर दिया गया है। नक्सलवाद से मुक्ति के लिए किए गए प्रयास...

राष्ट्रीय नीति और कार्य योजना-2015

- नक्सलवाद की समस्या को जड़ से खत्म करने के लिए 2015 में 'एलडब्ल्यूई से निपटने के लिए राष्ट्रीय नीति और कार्य योजना' को मंजूरी दी गई थी। इसमें सुरक्षा से जुड़े उपायों, विकास कार्यों, स्थानीय समुदायों के अधिकारों और हकों को सुनिश्चित करने जैसी कई रणनीतियों पर काम किया।
- एलडब्ल्यूई प्रभावित राज्यों में केंद्र सरकार की ओर से केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों की तैनाती, इंडिया रिजर्व बटालियन की स्थापना, हेलीकॉप्टर सहायता, पुलिस प्रशिक्षण और आधुनिकीकरण, जरूरी धन, हथियार व उपकरण उपलब्ध कराने के साथ-साथ खुफिया जानकारी साझा करने और किलेबंद पुलिस थानों का निर्माण।

3681.73 करोड़ रुपये

राज्यों की क्षमता निर्माण के लिए 2014-15 से, सुरक्षा संबंधी व्यय (एसआरई) योजना के तहत एलडब्ल्यूई प्रभावित राज्यों को आत्मसमर्पण करने वाले एलडब्ल्यूई कैडर के पुनर्वास, एलडब्ल्यूई हिंसा में मारे गए शहीद सुरक्षा बल कर्मियों/नागरिकों के परिवारों को अनुग्रह राशि आदि के लिए जारी किए गए।

समन्वय के तीनों पहलुओं पर काम करने की शुरुआत की। इस दिशा में 2014-2026 का समयकाल, देश की आंतरिक सुरक्षा के इतिहास में स्वर्णिम काल के रूप में अंकित किया जाएगा।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कई अवसरों पर कहा था कि "हम 31 मार्च, 2026 को पूरे देश को नक्सली हिंसा से मुक्त करने में जरूर सफल होंगे।" इसी दिशा में पूर्वोत्तर में भी 10 हजार से अधिक युवा हथियार डालकर मुख्यधारा में शामिल हुए हैं और 12 से अधिक शांति समझौतों के माध्यम से पूर्वोत्तर में शांति प्रस्थापित करने का बहुत बड़ा काम हुआ है। जम्मू-कश्मीर और लद्दाख में भी अनुच्छेद 370 के निष्प्रभावी होने के बाद विकास के नए युग की शुरुआत हो चुकी है।

"2014 के बाद हमारी सरकार ने नक्सलवाद-माओवादी आतंक पर प्रचंड प्रहार किया। हमने शहरों में बैठे अर्बन नक्सलियों के समर्थकों, अर्बन नक्सलियों को भी किनारे लगाया, हमने वैचारिक लड़ाई भी जीती और नक्सलियों के गढ़ में जाकर उनसे मोर्चा लिया, इसका परिणाम आज देश के सामने है।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

हिंसा में आई लगातार कमी

- 'नेशनल पॉलिसी एंड एक्शन प्लान 2015' को लागू करने से हिंसा में कमी आई। एलडब्ल्यूई जो देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए एक गंभीर चुनौती रहा, उसे नियंत्रित किया गया।
- एलडब्ल्यूई से प्रभावित जिलों की संख्या 2014 में 126 से घटकर दिसंबर-2025 में सिर्फ 11 रह गई। इस पर भी प्रहार हुआ। अब कोई भी जिला अति प्रभावित नहीं है।

एलडब्ल्यूई अति प्रभावित जिले

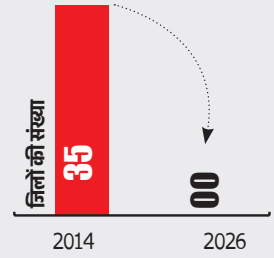

एलडब्ल्यूई द्वारा की गई हिंसक घटनाएं

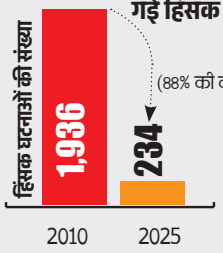

सुरक्षा बलों की मौत में आई कमी

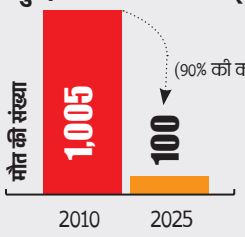

नक्सलियों की मौत

वर्ष	संख्या
2025	364

- 1,022 को गिरफ्तार किया गया जबकि 2,337 ने आत्मसमर्पण किया।

वामपंथी उग्रवाद से संबंधित हिंसा की रिपोर्ट करने वाले पुलिस स्टेशन

वर्ष	पुलिस स्टेशन
2010	465
2025	119
2026	60

24 नक्सलियों ने 23 मई 2025 को आत्मसमर्पण किया।

258 नक्सलियों ने छत्तीसगढ़ व महाराष्ट्र में अक्टूबर 2025 में किया समर्पण।

7,409 वामपंथी उग्रवादी गिरफ्तार किए गए वर्ष 2019 से 15 जनवरी, 2026 के बीच जबकि 5,880 ने आत्मसर्मण किया।

नक्सल मुक्त तारीख तय करने के बाद...

706
नक्सली 2024, 2025, 2026 के मार्च तक मुठभेड़ में मारे गए।

2,218
नक्सली गिरफ्तार हुए।

4,839
नक्सलियों ने आत्मसमर्पण किया।

लाल आतंक से मुक्त भारत

राष्ट्रीय सुरक्षा को लेकर पिछले 12 साल में भारत की सबसे बड़ी सफलता-नक्सलवाद-माओवादी आतंक की कमर तोड़ना रही है। 2014 से पहले हमारे देश में हालत ऐसे थे कि देश के बीचों-बीच नक्सली-माओवादी अपनी हुकूमत चलाते थे। नक्सली क्षेत्रों में देश का संविधान नहीं चलता था। पुलिस प्रशासन वहां काम नहीं कर पाता था। शासन-प्रशासन उनके आगे लाचार नजर आता था। 2014 से पहले देश के करीब सवा सौ जिले माओवादी हिंसा की चपेट में थे, लेकिन पिछले 12 साल की मेहनत का परिणाम है कि अब देश माओवादी आतंक से पूरी तरह आजाद होकर खुली हवा

पुनर्वास और प्रोत्साहन का भी दिखा असर

- पुनर्वास पैकेज में, अन्य बातों के अलावा, उच्च रैंक वाले एलडब्ल्यूई कैडर के लिए 5 लाख रुपये और अन्य एलडब्ल्यूई कैडर के लिए 2.5 लाख रुपये के तत्काल अनुदान की व्यवस्था की गई।

50,000

रुपये की प्रोत्साहन राशि आत्मसमर्पण पर और सामूहिक आत्मसमर्पण पर यह राशि दोगुनी हो जाती है।

- सरेंडर करने वाले को एक मोबाइल दिया जाता है।
- हथियार जमा कराने पर मुआवजा मिलता है।
- पुनर्वसन केंद्र पर कौशल प्रशिक्षण व टूल किट वितरण किया जाता है।

10,000

रुपये प्रतिमाह 36 महीने तक के लिए सहायता दी जाती है। सभी को पीएम आवास का उपहार मिलता है।

- नक्सलमुक्त पंचायत होते ही गांवों के विकास के लिए 1 करोड़ रुपये दिए जाते हैं।
- इनके बच्चों के लिए 12वीं तक मुफ्त शिक्षा की व्यवस्था, महिलाओं को 2 लाख रु. और पुरुषों के लिए 5 लाख रु. तक की ऋण की व्यवस्था।

में सांस ले रहा है। करोड़ों लोग पीढ़ियों बाद पहली बार डर और खौफ के साये से निकलकर विकास की मुख्यधारा का हिस्सा बने हैं। जिन इलाकों में माओवादी नक्सली सड़कें नहीं बनने देते थे, स्कूल नहीं खुलने देते थे, अस्पताल नहीं बनने देते थे, बने-बनाए स्कूल और अस्पताल को बम से उड़ा देते थे। डॉक्टरों को गोलियों से भून देते थे, मोबाइल टावर्स नहीं

“कई सारे बड़े काम जो आजादी के वक्त से इस देश की जनता चाहती थी, वे सारे काम नरेंद्र मोदी जी के इन 12 सालों में हुए और अब नक्सलवाद से मुक्त भारत की रचना भी उन्हीं के शासन में ही हो रही है। ये 12 साल देश के लिए एक प्रकार से बहुत शुभंकर साबित हुए हैं।

–अमित शाह, केंद्रीय गृह मंत्री

लगने देते थे, सुरक्षा बलों के कैंप पर हमला करके कैदियों को छुड़ा ले जाते थे, हथियार लूट लेते थे, इंफ्रास्ट्रक्चर के काम में ठेकेदारों से कमीशन की उगाही करते थे, ट्रकों, मालगाड़ियों के डिब्बे में आग लगा देते थे, वहां अब राजमार्ग बन रहे हैं, नए उद्योग लग रहे हैं। देश को सफलता सुरक्षा बलों के तप, त्याग और साहस से मिली है। इसलिए 2025 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूरे देश को यह भरोसा दिलाया था कि जब तक देश नक्सलवाद-माओवाद के आतंक से पूरी तरह मुक्त नहीं हो जाता, वह न रुकने वाले हैं, न चैन से बैठने वाले हैं।

संवाद→सुरक्षा→समन्वय

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, भारत में नक्सलवाद के खिलाफ लड़ाई-सुरक्षा, विकास और सामाजिक न्याय के त्रिकोण पर आधारित है। देश ने केंद्र और राज्यों के बीच सतत सक्रिय सहयोग से 31 मार्च 2026 को नक्सल-मुक्त का लक्ष्य प्राप्त किया। यह सरकार की निर्णायक नीति और उसकी शांति एवं विकास के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के एक दशक का प्रमाण है। सरकार ने नक्सलवाद के खिलाफ एक एकीकृत, बहुआयामी और कठोर रणनीति अपनाई है, जो पिछली सरकारों के बिखरे हुए दृष्टिकोण की जगह कामयाब साबित हुई है। संवाद→सुरक्षा→समन्वय के स्पष्ट सिद्धांतों पर चलते

तीन तारीख... बदल गई दिशा

विकास के लिए केंद्र सरकार ने होल ऑफ गवर्नमेंट तो सुरक्षा नकेल कसने के लिए होल ऑफ एजेंसी के दृष्टिकोण से बदली दिशा, जिसमें तीन तारीखों ने लिखी निर्णायक पटकथा...

- ऑल एजेंसी एप्रोच से एनआईए, ईडी, इंटेलिजेंस आदि ने नक्सलियों के नेटवर्क, फंडिंग और सपोर्ट सिस्टम पर चौतरफा प्रहार किया।
- होल ऑफ गवर्नमेंट के एप्रोच से प्रभावित इलाकों में विकास के काम शुरू हो चुके थे।
- **20 अगस्त 2019,** केंद्रीय गृह मंत्रालय में बैठक हुई और इसमें पुलिस समन्वय, पुलिस आधुनिकीकरण, रिटायर्ड नक्सलियों को पुलिस बल में लाने और खुफिया एजेंसी के साथ समन्वय, इन सभी पहलुओं पर एक खाका तैयार हुआ।
- **24 अगस्त 2024,** छत्तीसगढ़ में चुनाव के बाद सत्ता परिवर्तन हो चुका था। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह वहां पहुंचे और केंद्र-राज्य के बीच साझा रणनीति बनी। इसी तारीख को एलान हुआ- 31 मार्च 2026 तक नक्सल मुक्त होगा भारत।
- **31 मार्च 2026,** नक्सल मुक्त भारत के संकल्प की सिद्धि की तारीख से एक दिन पूर्व ही लोकसभा में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने किया एलान।

केंद्रीय गृह मंत्री का पूरा भाषण देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

हुए, सरकार ने मार्च 2026 तक प्रत्येक नक्सल प्रभावित क्षेत्र को पूर्णतः नक्सल मुक्त बना दिया।

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह के मुताबिक, जहां पहले बिखरे हुए दृष्टिकोण के साथ काम होता था, घटना-आधारित कार्रवाई होती थी और कोई स्थायी नीति नहीं थी। एक प्रकार से कहें तो सरकार के रिस्पॉन्स का स्टेयरिंग नक्सलियों के हाथों में

पुलिस बल का आधुनिकीकरण

- राज्यों की पुलिस फोर्स को 'पुलिस फोर्स के आधुनिकीकरण' योजना के तहत सहायता दी गई।
- योजना के तहत, राज्य सरकारों को हथियार, इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी के लिए उपकरण, कम्युनिकेशन, ट्रेनिंग, मोबिलिटी और पुलिस आवास एवं अन्य इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए केंद्र सरकार ने मदद दी।
- योजना की उप-योजना 'स्पेशल इंफ्रास्ट्रक्चर स्कीम (एसआईएस)' के तहत एलडब्ल्यूई प्रभावित राज्यों को विशेष बलों, स्टेट इंटेलिजेंस ब्रांच, जिला पुलिस और मजबूत पुलिस थानों का निर्माण किया गया।

1,224.59 करोड़ रुपये
की सहायता वर्ष 2014-15 से अब तक इस योजना के माध्यम से केंद्रीय एजेंसियों को दी गई।

596 फोर्टिफाइड पुलिस स्टेशन बनाए गए बीते 11 वर्ष में।

350 पुलिस स्टेशन थे नक्सल घटनाएं दर्ज करने वाले जो अब घटकर 60 रह गई।

406 नए केंद्रीय सशस्त्र बल के कैंप 2020 से बनाए गए।

68 नाइट लैंडिंग हेलीपैड बनाए गए।

400 बुलेट और ब्लॉस्ट प्रूफ गाड़ियां जवानों को दी गई।

5 अस्पताल जवानों के लिए बनाए गए और संचार तंत्र दुरुस्त हुआ।

फंडिंग रोकने के लिए कदम

एलडब्ल्यूई को मिलने वाली फंडिंग रोकने पर सरकार ने खास ध्यान दिया। खासकर कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (माओवादी) और उसे धन उपलब्ध कराने वालों के बीच की सांठगांठ का पता लगाने के लिए लगातार कार्रवाई की गई। एलडब्ल्यूई को धन और अन्य संसाधन मिलने से रोकने के लिए राज्य पुलिस, केंद्रीय एजेंसियों के साथ मिलकर समन्वित और प्रभावी कदम उठाया गया। एलडब्ल्यूई के वित्तीय नेटवर्क को तोड़ने के लिए सरकार की ओर से उठाए गए कदम...

- आतंकवाद की फंडिंग पर रोक लगाने के लिए वर्ष 2011 से गृह मंत्रालय में "आतंकवाद की फंडिंग से मुकाबला (सीएफटी) सेल" नाम से एक विशेष इकाई बनाई गई थी। यह सेल अलग-अलग खुफिया और प्रवर्तन एजेंसियों के साथ समन्वय कर आतंक के वित्तीय नेटवर्क पर कार्रवाई करती है।
- राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने भी एक टेरर फंडिंग और फेक करेंसी सेल (टीएफएफसी) बनाया गया ताकि आतंकवादी फंडिंग और जाली भारतीय करेंसी नोट (एफआईसीएन) की जांच और मुकदमा चलाया जा सके।
- देश के अंदर एआईसीएन के सर्कुलेशन का मुकाबला करने के लिए केंद्र और राज्यों की अलग-अलग सुरक्षा एजेंसियों के बीच इंटेलिजेंस/जानकारी शेयर करने के लिए एक एफआईसीएन समन्वय केंद्र (एफसीओआरडी) भी बनाया गया।
- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के रिजोल्यूशन और गैर-कानूनी गतिविधियां (रोकथाम) कानून के तहत आतंकवादी संगठनों और उनके सदस्यों के खिलाफ कई तरह के प्रतिबंध लगाए गए। इसमें फंड/संपत्ति को फ्रीज करना और जब्त करना शामिल रहा। इससे आतंकवादी संगठनों के फंड फ्लो पर रोक लगी।
- गृह मंत्रालय में 2016 में एलडब्ल्यूई कैडर को फंड के फ्लो की निगरानी के लिए दो मल्टी-डिसिप्लिनरी ग्रुप बनाए गए थे, एक केंद्र स्तर पर और दूसरा राज्य स्तर पर।

40 करोड़ रुपये

से अधिक की संपत्ति जब्त की केंद्र सरकार ने एनआईए में एक समर्पित विभाग बनाकर। नक्सलियों के वित्तपोषण पर प्रभावी ढंग से लगाम लगाई गई। जबकि राज्यों ने भी 40 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति जब्त की।

12 करोड़ रुपये

प्रवर्तन निदेशालय ने कुर्क किए। इस कार्रवाई से शहरी नक्सलियों को गंभीर नैतिक और मनोवैज्ञानिक क्षति पहुंची और उनके सूचना युद्ध नेटवर्क पर नियंत्रण और भी कड़ा हो गया।

था। लेकिन 2014 के बाद से सरकार के अभियानों, कार्यक्रमों की स्टेयरिंग भारत सरकार के गृह मंत्रालय के पास है। यह एक बहुत बड़ा नीतिगत परिवर्तन है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह कहते हैं, "हमारी सरकार की नीति है जो हथियार छोड़कर सरेंडर करना चाहते हैं, उनके लिए रेड कारपेट है और उनका स्वागत है, लेकिन अगर हथियार लेकर निर्दोष आदिवासियों को मारना चाहते हैं तो सरकार का धर्म, निर्दोष आदिवासियों को बचाना और हथियारबंद नक्सलियों का सामना करना है।" केंद्र और राज्य के बीच बेहतर समन्वय हुआ, राज्यों की क्षमता और पुलिस व्यवस्था में सुधार किया गया है। केंद्रीय सशस्त्र बल और राज्य पुलिस का समन्वय बढ़ाया गया।

प्रतीकात्मक फोटो

विकास केंद्रित पहल

विकास के मोर्चे पर, सरकार की मुख्य योजनाओं के अलावा, एलडब्ल्यूई प्रभावित कई इलाकों के लिए खास पहल की गई। इसमें रोड नेटवर्क के विस्तार, टेलीकम्युनिकेशन कनेक्टिविटी में सुधार, शिक्षा, स्किल डेवलपमेंट और वित्तीय समावेशन पर खास जोर दिया गया है। जिनमें प्रमुख हैं...

सड़क नेटवर्क को मजबूत करने के लिए दो विशेष योजनाएं-रोड रिक्वायरमेंट प्लान (आरआरपी) और एलडब्ल्यूई प्रभावित क्षेत्रों के लिए रोड कनेक्टिविटी प्रोजेक्ट (आरसीपीएलडब्ल्यूईए) लागू की गई।

17,589
किमी सड़कें बनाने की मंजूरी, जिसमें से 12 हजार किमी सड़कें बन चुकी हैं।

9,233
टावर एलडब्ल्यूई प्रभावित इलाकों में टेलीकॉम कनेक्टिविटी बेहतर बनाने के लिए लगाए गए।

6,025 पोस्ट ऑफिस वित्तीय समावेशन के लिए डाक विभाग ने एलडब्ल्यूई प्रभावित जिलों में बैंकिंग सेवाओं के साथ खोले।

- कौशल विकास के लिए 46 औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान और 49 कौशल विकास केंद्र खोले गए।
- आदिवासी इलाकों में अच्छी शिक्षा के लिए 259 एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय शुरू किए।

वामपंथी उग्रवाद प्रभावित जिलों में खोलीं

1,804 बैंक शाखाएं

1,321 एटीएम

37,850 बैंकिंग कोरेस्पोंडेंट

- विशेष केंद्रीय सहायता योजना के तहत सबसे ज्यादा एलडब्ल्यूई प्रभावित जिलों में पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर में कमियों को पूरा करने के लिए वर्ष 2017 में योजना शुरू होने के बाद से अब तक 3,953.67 करोड़ रुपये जारी किए जा चुके हैं।
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2 अक्टूबर 2024 को झारखंड से 'धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान' की शुरुआत की। इस अभियान का लक्ष्य 15,000 से अधिक गांवों में बुनियादी सुविधाओं की पहुंच सुनिश्चित करना रहा। साथ ही, सरकार इन क्षेत्रों में 3-सी यानी सड़क संपर्क, मोबाइल संपर्क और वित्तीय संपर्क को लगातार मजबूत कर रही है, ताकि विकास की गति तेज हो और लोगों को बेहतर सुविधाएं मिल सकें।

पहली बार भारत सरकार ने बिना किसी भ्रम के एक स्पष्ट नीति अपनाई। राज्य पुलिस और केंद्रीय सुरक्षाबलों को छूट दी गई। साथ ही, इंटेलिजेंस, इंफॉर्मेशन शेयरिंग तथा ऑपरेशन में कोआर्डिनेशन के लिए भारत सरकार और राज्य सरकारों के बीच एक व्यावहारिक सेतु बनाया गया। अवैध हथियारों की आपूर्ति पर नकेल कसी गई। 2019-26 के बीच नक्सलियों की हथियार आपूर्ति श्रृंखला को रोकने में सफलता मिली। नक्सलियों का वित्तपोषण करने वालों पर राष्ट्रीय जांच एजेंसी और प्रवर्तन निदेशालय ने नकेल कसी। साथ ही, नक्सलवादियों के अर्बन नक्सल सपोर्ट, लीगल सहायता और मीडिया नरेटिव गढ़ने पर भी सख्ती की गई। सेंट्रल कमेटी के

240

बिस्तरों वाला सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल जगदलपुर में बना। इस इलाके में पहले प्राथमिक और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र तक नहीं थे।

2,212 करोड़ रुपये

के कार्य सिविक प्रोग्राम के तहत स्वास्थ्य शिविरों, दवाओं के लिए हुए।

- जनजातीय युवाओं के लिए एक्सचेंज कार्यक्रम कराए गए।
- राज्यों के लिए सुरक्षा संबंधी विशेष व्यय पहल लाई गईं।

3,000

करोड़ रुपये 10 वर्ष में दिए गए।

5,000

करोड़ रुपये विशेष इंफ्रास्ट्रक्चर योजना में दिए गए।

2,000

करोड़ रुपये और विस्तारित विशेष इंफ्रास्ट्रक्चर योजना में दिए गए।

4,000

करोड़ रुपये केंद्रीय निधि द्वारा क्रिटिकल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए दिए गए।

बस्तर के विकास को नए आयाम

- बस्तर से नक्सलवाद लगभग समाप्त हो चुका।
- इसके लिए बस्तर के हर गांव में एक स्कूल बनाने की मुहिम चली।
- हर गांव में राशन की दुकान खोलने की मुहिम चली।
- सभी तहसील पंचायत में सीएचसी/पीएचसी बने।
- आधार कार्ड, राशन कार्ड बने, 5 किलो मुफ्त राशन और गैस चूल्हे की सुविधा मिली।
- बस्तर ओलंपिक्स और बस्तर पंडुम के माध्यम से खेलों को बढ़ावा।

1.20 लाख कलाकारों ने बस्तर पंडुम में भागीदारी की।

5.50 लाख आदिवासी लोगों ने खेल में भाग लिया।

मेंबर पर लक्षित तरीके से कार्रवाई की गई। ऑपरेशन ऑक्टोपस और ऑपरेशन डबल बुल जैसे टारगेटेड ऑपरेशन किए गए। डीआरजी, एसटीएफ, सीआरपीएफ और कोबरा की संयुक्त ट्रेनिंग की भी शुरुआत की गई। चारों ने मिलकर अभियान चलाया। इसके साथ-साथ फॉरेंसिक जांच शुरू की गई, लोकेशन ट्रैकिंग सिस्टम उपलब्ध कराया गया और मोबाइल फोन की गतिविधियों को राज्य पुलिस को उपलब्ध कराया गया। साइंटिफिक कॉल लॉग्स एनालिसिस के सॉफ्टवेयर बने और सोशल मीडिया एनालिसिस से भी उनके छुपे हुए समर्थकों को ढूंढने का काम हुआ। इससे नक्सल विरोधी अभियान में न सिर्फ तेजी आई बल्कि परिणाम भी मिले।

नक्सल मुक्त भारत-एक युगांतरकारी तारीख

31 मार्च 2026, भारत के इतिहास के लिए एक युगांतरकारी तारीख बनी है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक बहुआयामी रणनीति अपनाई गई। इसमें सुरक्षा बलों के निर्मम अभियानों, विकास के लिए व्यापक पहल और पुनर्वास नीतियों को शामिल किया गया। एजेंसियों के बीच सहयोग से चलाए गए इन अभियानों से माओवादी नेटवर्क का सफाया करने और प्रभावित क्षेत्रों में शांति बहाली में अभूतपूर्व सफलता मिली। यह पहला अवसर है कि इस तरह की चुनौतियों को पूरी तरह से खत्म करने के लिए किसी सरकार ने एक निश्चित तारीख तय की और उसे साकार भी कर दिखाया। अगस्त 2024 में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने दो-टूक कहा था कि नक्सलवाद 31 मार्च, 2026 से पहले छत्तीसगढ़ समेत समूचे देश में बीते जमाने की बात बन चुका होगा। इस बात की जानकारी उन्होंने कई मौकों पर देश और देशवासियों को दी। इस लक्ष्य को साकार करने के लिए सुरक्षा बलों ने कई ऑपरेशन चलाए। वर्ष 2022 में 'ऑपरेशन ऑक्टोपस' बिहार के बूढ़ा पहाड़ क्षेत्र में चला। इसी वर्ष 'ऑपरेशन डबल बुल गुमला', लोहरदगा और लातेहार में चला और तीनों क्षेत्र चंद दिनों में नक्सल मुक्त हो गए।

"बीते एक साल में ही 2100 से ज्यादा नक्सलियों ने आत्मसमर्पण किया है 900 से ज्यादा गिरफ्तारियां हुईं हैं, और जो हथियार छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे, ऐसे 300 से अधिक कट्टर नक्सलियों को सुरक्षा बलों ने मार गिराया है। इसका परिणाम ये हुआ कि जो इलाके कभी डर के साए में जीने को मजबूर थे वहां आज विकास की नई ऊर्जा का संचार हो रहा है।

—नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

क्या है माओवादी विचारधारा? इसका ध्रुव वाक्य क्या है? जब हम आजाद हुए, हमने कहा 'सत्यमेव जयते' , सत्य की हमेशा विजय हो, सत्य की विजय होती है। पर, इनका ध्रुव वाक्य है कि 'सत्ता बंदूक की नली से निकलती है।' वहां सत्ता शब्द विकास के लिए नहीं, अपनी विचारधारा के अस्तित्व के लिए है। यहां विकास की कोई बात नहीं है। इनका लोकतंत्र में विश्वास नहीं है।

–अमित शाह, केंद्रीय गृह मंत्री

इसी तरह 1-3 सितंबर 2022 को 'ऑपरेशन थंडर स्ट्रॉम' झारखंड में सरायकेला पश्चिमी सिंहभूम और खूंटी जिले में चला। वर्ष 2022 के ही जून-जुलाई में 'ऑपरेशन भीमबांध' मुंगेर जिले में चला। 'ऑपरेशन चक्रबांधा' बिहार के गया और औरंगाबाद जिले में चलाया। मई 2025 में सुरक्षा बलों ने नक्सल मुक्त भारत के संकल्प में एक ऐतिहासिक सफलता हासिल करते हुए छत्तीसगढ़-तेलंगाना सीमा पर करेंगुट्टालु हिल में नक्सलवाद के खिलाफ सबसे बड़े अभियान में 31 नक्सलियों को मार गिराया था। जिस करेंगुट्टालु हिल पर लाल आतंक का राज था वहां अब गर्व से तिरंगा लहरा रहा है। यह ऐसा अभियान था जिसे सुरक्षा बलों ने सिर्फ 21 दिनों में पूरा किया। यह अब तक का सबसे बड़ा नक्सल विरोधी अभियान बना जिसमें सुरक्षा बलों की तरफ से कोई भी हताहत नहीं हुआ। सुरक्षा बलों ने एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल करते हुए भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) के महासचिव नंबला केशव राव उर्फ बासवाराजू समेत 27 खूंखार नक्सलियों को नारायणपुर में ढेर कर दिया। बासवाराजू माओवादी आंदोलन की रीढ़ की हड्डी था। तीन दशक बाद माओवादियों का कोई इतना बड़ा नेता मारा गया। ऑपरेशन ब्लैक फॉरेस्ट के बाद विभिन्न राज्यों में 54 माओवादियों को गिरफ्तार किया गया और 84 ने आत्मसमर्पण कर दिया।

विकास का हरित क्षेत्र बनता रेड कॉरिडोर

पिछला एक दशक एक प्रकार से शांति और प्रगति का कालखंड बना है। लंबे अरसे तक देश कई तरह की हिंसक वारदातों का शिकार था। चाहे आतंकवाद हो या नक्सलवाद। कोई पहले तो कोई बाद में शुरू हुआ, लेकिन आज नक्सलवाद-माओवाद को जड़ से उखाड़ कर देश के सुरक्षा बलों ने लोगों में न सिर्फ मजबूत सुरक्षा का भाव जगाया है बल्कि देश को तेज प्रगति की ओर अग्रसर किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कहते हैं, "देश में सैकड़ों जिले नक्सल की चपेट से निकलकर के आज मुक्ति का सांस ले रहे हैं। हमें गर्व है कि बम और बंदूक के सामने देश का संविधान जीत रहा है, हमारे देश का संविधान विजयी हो रहा है। देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए साफ दिख रहा है कि कल तक जो

विशेष कोर्ट और जांच एजेंसियां

- एनआईए को मजबूत किया गया और एलडब्ल्यूई प्रभावित राज्यों में स्टेट इन्वेस्टिगेशन एजेंसियों (एसआईए) को भी स्थापित किया गया।
- छत्तीसगढ़ में चार एलडब्ल्यूई स्पेशल कोर्ट शुरू किए और दूसरे राज्यों में भी एक्सक्लूसिव कोर्ट स्थापित किए गए।

280 नए शिविर 2019 से सुरक्षा संबंधी कमियों को दूर करने के लिए स्थापित किए गए, 15 नए संयुक्त कार्य बल बनाए गए तथा विभिन्न राज्यों में राज्य पुलिस की सहायता के लिए 6 सीआरपीएफ बटालियनों को तैनात किया गया।

वर्ष 2014 के बाद क्या बदला? सीएपीएफ तो वही है। राज्य पुलिस भी वही है। वर्ष 2014 के बाद स्पष्ट नीति और मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति इस काम में जुड़ी। नरेंद्र मोदी जी ने यह स्पष्ट कर दिया कि इस देश के किसी भी कोने में चाहे कश्मीर हो, चाहे उत्तर-पूर्व हो, चाहे वामपंथी उग्रवाद का विस्तार हो, गैर-कानूनी प्रवृत्ति नहीं चलेगी। इस पर कठोरता से काम किया जाएगा।

–अमित शाह, केंद्रीय गृह मंत्री

रेड कॉरिडोर थे, वो आज ग्रीन ग्रोथ जोन में परिवर्तित होते नजर आ रहे हैं।" नक्सल प्रभावित राज्यों में विशेष रूप से छत्तीसगढ़ ने जो परिवर्तन देखा है, वह अद्भुत और प्रेरणादायी है। कभी यह राज्य नक्सलवाद और पिछड़ेपन से पहचाना जाता था। आज वही राज्य समृद्धि, सुरक्षा और स्थायित्व का प्रतीक बन रहा है। आज बस्तर ओलंपिक की चर्चा देश के कोने-कोने में है।

बीजापुर के चिलकापल्ली गांव में सात दशकों के बाद पहली बार बिजली पहुंची। अबूझमाड़ के रेकावया गांव में आजादी के बाद पहली बार स्कूल बनाने का काम शुरू हुआ है। आज उन प्रभावित क्षेत्रों के गावों में विकास के कामों की बयार बह रही है। अब लाल झंडे की जगह तिरंगा शान से लहरा रहा है। आज बस्तर जैसे क्षेत्रों में डर नहीं, उत्सव का माहौल है।

इसमें संदेह नहीं कि 2014 के बाद केंद्र सरकार ने पूरी संवेदनशीलता के साथ भटके हुए नौजवानों को मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया। इसलिए अक्टूबर 2025 में एक कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था, बीते दशक में हजारों नक्सलियों ने हथियार डाले हैं। मैं आपको पिछले 75 घंटों का आंकड़ा देता हूं, लेकिन मेरे जीवन का एक बहुत बड़ा संतोष का विषय है, इन 75 घंटों में 303 नक्सलियों ने सरेंडर किया है। एक जमाने में जिनका 3 नॉट 3 चलता था न, आज वो 3 नॉट 3 सरेंडर हुए हैं। यह कोई सामान्य नक्सली नहीं हैं, किसी पर 1 करोड़ का इनाम था, किसी पर 15 लाख का इनाम था, किसी पर 5 लाख का इनाम था और यह सारे के सारे इनके नाम पर इनाम घोषित हुए थे। इन नक्सलियों से बहुत बड़ी मात्रा में हथियार भी पकड़े गए हैं। यह सारे लोग बंदूक और बम छोड़कर भारत के संविधान को गले लगाने के लिए तैयार हुए हैं। जब संविधान के लिए पूर्ण समर्पित सरकार होती है तब गलत रास्ते पर गया व्यक्ति भी लौटकर अपनी आंखों को उस संविधान पर टिका देता है। अब वो विकास की मुख्यधारा में आ रहे हैं। लोग स्वीकार कर रहे हैं कि वो गलत रास्ते पर थे। पांच-पांच दशक बिता दिए, जवानी खपा दी लेकिन उन्होंने जो सोचा था, वो परिवर्तन नहीं आया। अब यह भारत के संविधान पर विश्वास करते हुए आगे बढ़ेंगे। ■

राष्ट्रनीति
नए भारत की राजनीति का आधार

नया भारत एक नए आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ रहा है, जो अब चुनौतियों से घबराता नहीं, बल्कि टकराता है। यही कारण है कि देश ही नहीं, दुनिया में भी गल्फ से लेकर ग्लोबल वेस्ट तक और ग्लोबल साउथ से लेकर पड़ोसी देशों तक, भारत सभी के लिए भरोसेमंद साझेदार है। वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों और उससे निपटने की नीतियों का जिक्र करते हुए टीवी-9 समिट 2026 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिए स्पष्ट संदेश...

प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

> यह नया भारत है, अपने विकास के लिए कोई कसर बाकी नहीं छोड़ रहा है।
>
> देश हित को दल हित से ऊपर रखना आवश्यक है, क्योंकि राष्ट्र और उसका विकास राजनीति से ऊपर होता है।
>
> देश हित को सबसे ऊपर रखने की यही प्रेरणा भारत को विकसित और आत्मनिर्भर बनाएगी।

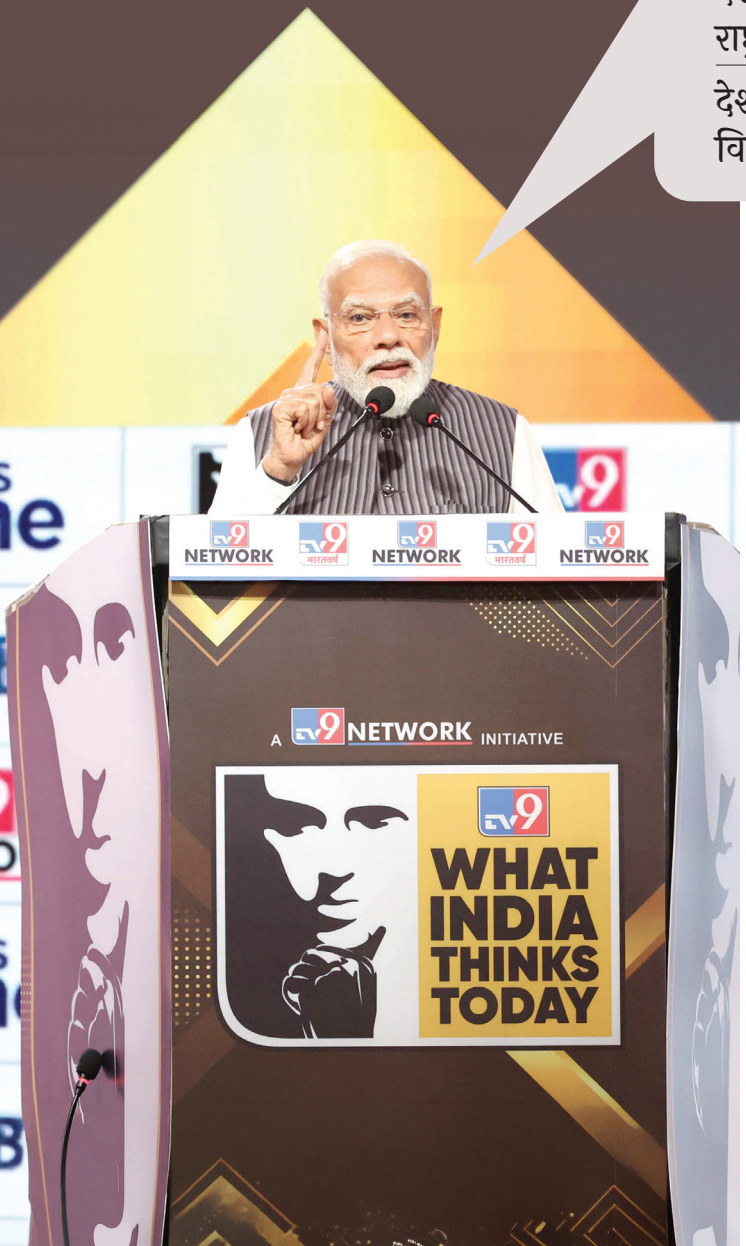

प्रधानमंत्री के संबोधन के अंश

आत्मविश्वास से भरपूर... सिद्धियों में बदलते संकल्प

भारत अब चुनौतियों को टालता नहीं है बल्कि चुनौतियों से टकराता है। बीते 5-6 साल में देखिए, कोरोना की महामारी के बाद चुनौतियां एक के बाद एक बढ़ती ही गई हैं। ऐसा कोई साल नहीं है, जिसने भारत की, भारतीयों की परीक्षा न ली हो। लेकिन 140 करोड़ देशवासियों के एकजुट प्रयास से भारत हर आपदा का सामना करते हुए आगे बढ़ रहा है। पहले भी योजनाएं तो बनती थीं, लेकिन आज परिणाम दिखते हैं। पहले गति धीमी थी, आज भारत फास्टट्रैक पर है। पहले संभावनाएं भी अंधकार में थीं, आज संकल्प सिद्धियों में बदल रहे हैं। इसलिए दुनिया को भी यह संदेश मिल रहा है कि यह नया भारत है। यह अपने विकास के लिए कोई कोर-कसर बाकी नहीं छोड़ रहा है।

युद्ध काल में दिख रहा सामर्थ्य

इस समय युद्ध की परिस्थितियों में भी भारत की नीति और रणनीति देखकर, भारत का सामर्थ्य देखकर दुनिया के अनेकों देश हैरान हैं। हमारे यहां कहावत है, सांच को आंच नहीं। 28 फरवरी से दुनिया में जो उथल-पुथल मची है, इन कठोर विपरीत परिस्थितियों में भी

वैश्विक उथल-पुथल...
फिर भी विकास पथ पर भारत

दुनिया की हर उथल-पुथल के बीच, भारत ने अपनी प्रगति की गति को भी बनाए रखा है। अगर मैं 28 फरवरी को युद्ध शुरू होने के बाद, 23 दिनों का ही ब्यौरा दूं, तो पूरब से पश्चिम तक, उत्तर से दक्षिण तक देश में हजारों करोड़ की विकास परियोजनाओं का काम हुआ है। यह सारे कदम इस बात का प्रमाण हैं कि विकसित भारत बनाने के लिए देश कितनी तेज गति से काम कर रहा है।

- दिल्ली मेट्रो रेल के महत्वपूर्ण गलियारों का लोकार्पण।
- सिलचर में हाई स्पीड कॉरिडोर का शिलान्यास।
- कोटा में नए एयरपोर्ट का शिलान्यास।
- मदुरै एयरपोर्ट को इंटरनेशनल एयरपोर्ट का दर्जा।
- औद्योगिक विकास को गति देने के लिए भव्य स्कीम को मंजूरी दी गई है।

2028 तक जल जीवन मिशन को बढ़ाने का निर्णय लिया गया है।

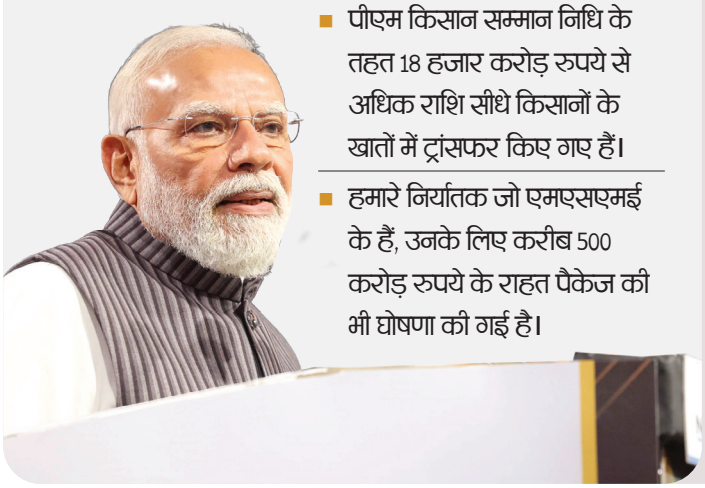

- पीएम किसान सम्मान निधि के तहत 18 हजार करोड़ रुपये से अधिक राशि सीधे किसानों के खातों में ट्रांसफर किए गए हैं।
- हमारे निर्यातक जो एमएसएमई के हैं, उनके लिए करीब 500 करोड़ रुपये के राहत पैकेज की भी घोषणा की गई है।

आकलन से नई संभावनाओं का जन्म

प्रबंधन की दुनिया में एक सिद्धांत कहा जाता है - What gets measured, gets managed. लेकिन मैं इसमें एक बात और जोड़ना चाहता हूं, What gets measured, gets improved और ultimately, gets transformed. क्योंकि आकलन जागरूकता पैदा करता है। आकलन जवाबदेही तय करता है और सबसे महत्वपूर्ण आकलन संभावनाओं को जन्म देता है। अगर 2014 से पहले के 10-11 साल और 2014 के बाद के 10-11 साल का आप आकलन करेंगे, तो यही पाएंगे कि कैसे इसी सिद्धांत पर चलते हुए, भारत ने हर सेक्टर को ट्रांसफॉर्म किया है। जैसे-

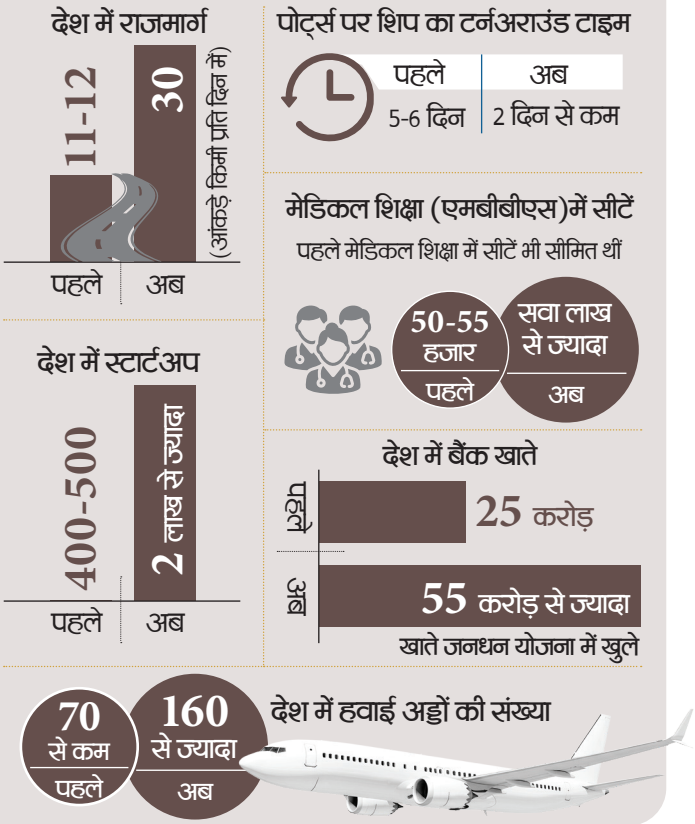

भारत प्रगति के, विकास के, विश्वास के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है। इन 23 दिनों में भारत ने संबंध बनाने, निर्णय लेने और संकट संभालने की अपनी क्षमता दिखाई है।

राष्ट्र हित, शांति, संवाद के साथ है भारत

आज जब दुनिया इतने सारे खेमों में बंटी हुई है, भारत ने अभूतपूर्व और अकल्पनीय संबंध बनाए हैं। खाड़ी देशों से लेकर वैश्विक पश्चिम तक, वैश्विक दक्षिण से लेकर पड़ोसी देशों तक- भारत सभी का भरोसेमंद साथी है। कुछ लोग पूछते हैं, हम किसके साथ हैं? तो उनको मेरा जवाब यही है कि हम भारत के साथ हैं, हम भारत के हितों के साथ हैं, शांति के साथ हैं, संवाद के साथ हैं।

राष्ट्र का भविष्य सर्वोपरि

जब राष्ट्रनीति ही राजनीति का मुख्य आधार हो, तब देश का भविष्य सर्वोपरि होता है। लेकिन जब राजनीति में व्यक्तिगत स्वार्थ हावी हो जाता है, तब लोग देश के फ्यूचर के बजाय अपने फ्यूचर के बारे

पूर्वी भारत का विकास

आज हमारा प्रयास है कि अतीत में विकास का जो असंतुलन पैदा हो गया था, उसको अवसरों में बदला जाए। पूर्वी भारत संसाधनों से समृद्ध है, दशकों तक वहां जिन्होंने सरकारें चलाई हैं, उनकी उपेक्षा ने पूर्वी भारत के विकास पर ब्रेक लगा दी थी। अब हालात बदल रहे हैं।

- असम में कभी गोलियों की आवाज सुनाई देती थी, आज वहां सेमीकंडक्टर यूनिट बन रही है।
- ओडिशा में सेमीकंडक्टर से लेकर पेट्रोकेमिकल्स तक अनेक नए-नए सेक्टर का विकास हो रहा है।
- बिहार में 6-7 दशक में गंगा नदी पर एक बड़ा पुल बन पाया था, वहीं बिहार में पिछले एक दशक में 5 से ज्यादा नए पुल बनाए गए हैं।
- यूपी में कट्टा मैन्युफैक्चरिंग की कहानियां कही जाती थीं, आज यूपी, मोबाइल फोन मैन्युफैक्चरिंग में दुनिया में अपनी पहचान बना रहा है।
- पूर्वी भारत का बड़ा राज्य पश्चिम बंगाल, एक समय में भारत के कल्चर, एजुकेशन, इंडस्ट्री और ट्रेड का हब होता था। यही वजह है कि बीते 11 वर्षों में केंद्र सरकार ने यहां विकास के लिए बड़ी मात्रा में निवेश किया है।

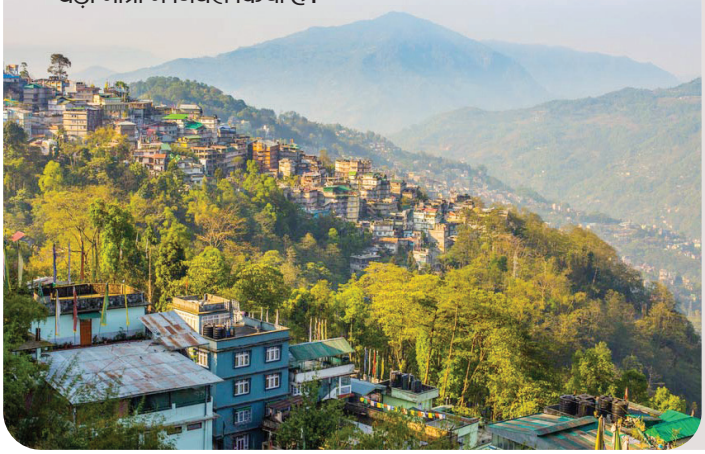

लोकतंत्र में विरोध और विद्वेष की रेखा जरूरी

जब राजनीति में विरोध, विकास के विरोध में बदल जाए, जब आलोचना देश की उपलब्धियों पर सवाल उठाने लगे, तब यह सिर्फ सरकार का विरोध नहीं रह जाता, यह देश की प्रगति से असहज होने की मानसिकता बन जाती है। आज स्थिति यह है कि देश की हर सफलता पर प्रश्न उठाया जाता है, हर प्रयास के असफल होने की कामना की जाती है। लोकतंत्र में विरोध जरूरी होता है। लेकिन विरोध और विद्वेष के बीच एक रेखा होती है। सरकार का विरोध करना लोकतांत्रिक अधिकार है। लेकिन देश को बदनाम करना, यह नीयत पर सवाल खड़ा करता है।

- कोविड के समय, देश ने अपनी वैक्सीन बनाई, तो विरोधी दल ने उस पर भी संदेह जताया। मेक इन इंडिया की बात हुई, तो कहा गया कि यह सफल नहीं होगा, बब्बर शेर कहकर इसका मजाक उड़ाया गया।
- जब देश में डिजिटल इंडिया अभियान शुरू हुआ, तो उसका मजाक उड़ाया गया। लेकिन आज भारत दुनिया की सबसे बड़ी वैक्सीनेशन ड्राइव का उदाहरण है। भारत डिजिटल पेमेंट में दुनिया का अग्रणी देश है। भारत मैन्युफैक्चरिंग और स्टार्टअप में नई ऊंचाइयों को छू रहा है।

- ग्लोबल **AI** समिट में पूरी दुनिया भारत में जुटी थी, तो ऐसे विरोधी लोग कपड़े फाड़ने वहां पहुंच गए थे। इन लोगों को देश की इज्जत की कितनी परवाह है, यह इसी से पता चलता है। इसलिए आज आवश्यकता है कि देशहित को, दलहित से ऊपर रखा जाए क्योंकि अंत में राजनीति से ऊपर, राष्ट्र होता है, राष्ट्र का विकास होता है।

में सोचते हैं। आप जरा याद कीजिए 2004 से 2010 के बीच क्या हुआ था? जब पेट्रोल-डीजल और गैस की कीमतों का संकट आया था और तब एक लाख अड़तालीस हजार करोड़ रुपये के ऑयल बॉन्ड जारी किए थे। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह जी ने खुद कहा था कि वो आने वाली पीढ़ी पर कर्ज का बोझ डाल रहे हैं। उस बॉन्ड पर री-पेमेंट 2020 के बाद होनी थी। बीते 5-6 वर्षों में 1 लाख 48 हजार करोड़ रुपये की जगह, देश को 3 लाख करोड़ रुपये से अधिक की पेमेंट करनी पड़ी क्योंकि इसमें ब्याज भी जुड़ गया था।

संयम और संवेदनशीलता का समय

आज की व्यवस्थाओं में कोई भी देश युद्धों के दुष्प्रभाव से दूर रहे, ऐसा संभव नहीं होता। अनेक देशों में तो स्थिति बहुत गंभीर हो चुकी है। यह समय संयम का है, संवेदनशीलता का है। हमने कोरोना महासंकट के दौरान भी देखा है, जब देशवासी एकजुट होकर संकट का सामना करते हैं, तो कितने सार्थक परिणाम आते हैं। इसी भाव के साथ हमें इस युद्ध से बनी परिस्थितियों का सामना करना है। ■

संशोधित उड़ान योजना

भारत औद्योगिक विकास योजना को मंजूरी

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने संशोधित उड़ान योजना को मंजूरी दी है जिससे 100 नए एयरपोर्ट, 200 हेलिपैड और 441 हवाई पट्टियों का निर्माण होगा। इससे नए क्षेत्रों तक हवाई सेवाओं का विस्तार होगा और लोगों को सहज, सुलभ हवाई यात्रा का लाभ मिलेगा। साथ ही, भारत के औद्योगिक विकास को तेज करने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हुए भारत औद्योगिक विकास योजना (भव्य) को मंजूरी दी गई है। इसके अलावा, कई अन्य महत्वपूर्ण प्रस्तावों को भी दी गई मंजूरी...

निर्णय : भारत सरकार के बजटीय सहयोग से 28,840 करोड़ रुपये के कुल परिव्यय के साथ वित्त वर्ष 2026-27 से 2035-36 तक दस वर्षों की अवधि के लिए क्षेत्रीय कनेक्टिविटी योजना - संशोधित उड़ान के शुभारंभ और कार्यान्वयन को मंजूरी।

प्रभाव :

- जहां हवाई संपर्क कम है या जो क्षेत्र हवाई सेवा से वंचित है, वहां क्षेत्रीय हवाई संपर्क में सुधार होगा।
- टीयर-2 और टीयर-3 दर्जे के शहरों में आर्थिक विकास, व्यापार और पर्यटन को बढ़ावा।
- आम नागरिकों के लिए सस्ती हवाई यात्रा की सुविधा बढ़ेगी।
- दूरस्थ और पहाड़ी क्षेत्रों में आपातकालीन कार्रवाई और स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच में सुधार।
- क्षेत्रीय हवाई अड्डों और एयरलाइन संचालकों के लिए अधिक व्यवहार्यता और स्थिरता।
- आत्मनिर्भर भारत के तहत स्वदेशी एयरोस्पेस क्षेत्र को बढ़ावा।
- विकसित भारत 2047 लक्ष्य की ओर प्रगति।

निर्णय : भारत औद्योगिक विकास योजना (भव्य) के माध्यम से नए युग के प्लग-एंड-प्ले औद्योगिक विकास को मंजूरी।

प्रभाव : इसके तहत देश भर में 100 प्लग-एंड-प्ले औद्योगिक पार्क विकसित करने के लिए 33,660 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं।

- योजना का उद्देश्य विश्व स्तरीय औद्योगिक इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित करना, विनिर्माण की संभावना के द्वार खोलना और भारत की विकास गाथा को गति देना है।
- योजना के तहत 100 से 1,000 एकड़ तक के औद्योगिक पार्कों का विकास किया जाएगा। प्रति एकड़ एक करोड़ रुपये तक की वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी।
- इन पार्कों में आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर और श्रमिकों के लिए आवास शामिल होंगे।
- भव्य परियोजना से बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन होने की उम्मीद। इससे विनिर्माण, लॉजिस्टिक और सेवाओं में पर्याप्त प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार उत्पन्न होंगे।

निर्णय : कपास किसानों को प्रत्यक्ष सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से 2023-24 के सीजन के लिए भारतीय कपास निगम को 1,718.56 करोड़ रुपये के एमएसपी फंडिंग को मंजूरी।

प्रभाव : यह फंड बाजार भाव एमएसपी से नीचे जाने पर किसानों को उनकी फसल का उचित मूल्य दिलाने में मदद करेगा।

- सीसीआई ने कपास उत्पादक 11 प्रमुख राज्यों में एक मजबूत खरीद नेटवर्क स्थापित किया है। इसमें 152 जिलों में 508 से अधिक खरीद केंद्र कार्यरत हैं जो निर्बाध और सुलभ खरीद सुनिश्चित करते हैं।
- एमएसपी से संबंधित जानकारी का प्रसार, गांठ पहचान और पता लगाने की प्रणाली का कार्यान्वयन और 'कॉट-एली' मोबाइल एप लॉन्च से खरीद प्रक्रिया और किसानों तक बेहतर पहुंच संभव।
- कपास लगभग 60 लाख किसानों की आजीविका बनाए रखती है। प्रसंस्करण, व्यापार एवं वस्त्र उद्योग सहित संबद्ध कार्यकलापों में लगे 4 से 5 करोड़ लोगों की सहायता करती है।

निर्णय : उत्तर प्रदेश में बाराबंकी से बहराइच तक 4-लेन एक्सेस-कंट्रोल्ड राष्ट्रीय राजमार्ग-927 के निर्माण को मंजूरी।

- **लंबाई: 101.515 किमी**
- **लागत: 6,969.04 करोड़ रुपये**
- **निर्माण मॉडल : हाइब्रिड एन्यूटी मोड**

प्रभाव : बाराबंकी और बहराइच जिलों के शहरी क्षेत्रों में सड़क निर्माण की बड़ी खामियों, तीखे मोड़ों और भीड़भाड़ की समस्या का समाधान होगा।

- यात्रा को अधिक सुरक्षित और तेज बनाने के लिए समय में कमी और वाहन संचालन लागत में कमी आएगी।
- बाराबंकी-बहराइच के बीच निर्बाध कनेक्टिविटी, जिससे आर्थिक, सामाजिक और लॉजिस्टिक केंद्रों को मल्टी मॉडल लिंकेज मिलेगा।
- बहराइच और श्रावस्ती क्षेत्रों की कनेक्टिविटी में सुधार होगा, जो पीएम गति शक्ति योजना के अनुरूप है।
- नेपालगंज सीमा के माध्यम से भारत-नेपाल कनेक्टिविटी को मजबूती मिलेगी। रूपईडीहा लैंड पोर्ट तक बेहतर पहुंच सुनिश्चित होगी।

कैबिनेट के फैसलों पर प्रेस ब्रीफिंग देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

निर्णय : वित्त वर्ष 2026-27 से वित्त वर्ष 2030-31 की अवधि के लिए लघु जलविद्युत (एसएचपी) विकास योजना को मंजूरी।

प्रभाव : इसके तहत, लगभग 1,500 मेगावाट क्षमता की एसएचपी परियोजनाओं की स्थापना पर 2,584.60 करोड़ रुपये खर्च होंगे।

- विशेष रूप से पहाड़ी तथा उत्तर पूर्वी राज्यों को लाभ, जिनमें ऐसी परियोजनाओं की अपार संभावनाएं हैं।
- परियोजना निर्माण के दौरान 51 लाख व्यक्ति दिवस का रोजगार सृजित होने की उम्मीद।

निर्णय : जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन को सूचित किए जाने वाले भारत के राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान को 2031 से 2035 की अवधि के लिए मंजूरी।

प्रभाव : 2005 से 2020 के दौरान हमारी उत्सर्जन तीव्रता में 36 प्रतिशत की कमी आई है। अब उत्सर्जन तीव्रता में 2035 तक 47% की कमी का लक्ष्य रखा गया है।

- देश ने निर्धारित समय सीमा से 5 वर्ष पहले ही फरवरी 2026 तक कुल विद्युत क्षमता में गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा संसाधनों की हिस्सेदारी 52.57% हासिल कर ली है।
- अब गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा संसाधनों की हिस्सेदारी को 2035 तक बढ़ाकर 60% करने का लक्ष्य रखा है।
- भारत 2005 के स्तर की तुलना में 2035 तक वन और वृक्ष आवरण के माध्यम से 3.5 से 4.0 बिलियन टन कार्बन डाइऑक्साइड समतुल्य कार्बन सिंक का निर्माण करेगा।
- भारत की ये प्रतिबद्धताएं 2047 तक विकसित भारत और 2070 तक नेट-जीरो के लक्ष्य के अनुरूप हैं।

निर्णय : आव्रजन, वीजा, विदेशी पंजीकरण एवं ट्रैकिंग स्कीम जारी रखने की मंजूरी।

प्रभाव : यह योजना 1 अप्रैल 2026 से 31 मार्च 2031 तक 5 वर्षों के लिए बढ़ाई गई है जिसका कुल बजट 1,800 करोड़ रुपये है।

- **मुख्य उद्देश्य :** सुरक्षित और एकीकृत सेवा प्रणाली के तहत इमिग्रेशन और वीजा सेवाओं का आधुनिकीकरण और उन्नयन।

प्रगति की उड़ान 'एयरपोर्ट'

किसी भी देश में एयरपोर्ट सिर्फ एक सामान्य सुविधा नहीं होती है बल्कि यह राज्य और देश की प्रगति को नई उड़ान देते हैं। यही वजह है कि विकसित भारत के लिए आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर पर केंद्र सरकार अभूतपूर्व निवेश कर रही है। इसी कड़ी में 28 मार्च को 11,200 करोड़ रुपये के निवेश से विकसित उत्तर प्रदेश के जेवर स्थित नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा के प्रथम चरण के उद्घाटन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि आज से विकसित 'उत्तर प्रदेश, विकसित भारत अभियान' के एक नए अध्याय की हो रही है शुरुआत...

उत्तर प्रदेश के जेवर स्थित नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का शिलान्यास वर्ष 2021 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया था और अब इसका उद्घाटन भी उन्हीं के द्वारा किया गया। हवाई अड्डे के उद्घाटन के साथ उत्तर प्रदेश देश में सबसे ज्यादा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा वाला राज्य बन गया है। इस एयरपोर्ट के उद्घाटन के साथ प्रदेश में कुल एयरपोर्ट की संख्या 17 जबकि अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट की संख्या पांच हो गई है। एयरपोर्ट के उद्घाटन से आगरा, मथुरा, अलीगढ़, गाजियाबाद, मेरठ, इटावा, बुलंदशहर और फरीदाबाद सहित बड़े क्षेत्र को लाभ होगा। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों, लघु एवं मध्यम उद्यमों और युवाओं के लिए यह एयरपोर्ट अनेक नए अवसर लाएगा। इस एयरपोर्ट से विमान दुनिया भर के लिए

हाल ही में केंद्र सरकार ने करीब 29,000 करोड़ रुपये की मंजूरी के साथ उड़ान योजना का विस्तार किया है। इसके तहत छोटे शहरों में 100 नए एयरपोर्ट और 200 नए हेलीपैड बनाए जाएंगे।

उड़ान भरेंगे। जेवर एयरपोर्ट को तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 2003 में ही मंजूरी दी थी। केंद्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार के गठन के बाद इसकी नींव रखी गई। निर्माण कार्य शुरू हुआ और अब इसका परिचालन शुरू हो चुका है। इस हवाई अड्डे का शिलान्यास वर्ष 2021 में प्रधानमंत्री नरेंद्र ने ही किया था।

वैश्विक संकट के दौर में भी भारत की विकास की तीव्र गति पर

साल 2014 से पहले, देश में सिर्फ 74 एयरपोर्ट थे। आज 160 से अधिक एयरपोर्ट देश में हैं। अब महानगरों के अलावा, देश के छोटे-छोटे शहरों में भी हवाई कनेक्टिविटी पहुंच रही है। पहले जो सरकारें रही हैं, वे मानती थीं कि हवाई यात्रा सिर्फ अमीरों के लिए ही होनी चाहिए। लेकिन अब सरकार ने सामान्य भारतीय के लिए हवाई यात्रा को आसान बना दिया है।

–नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे की विशेषता

- नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा भारत की सबसे बड़ी ग्रीनफील्ड हवाई अड्डा परियोजनाओं में से एक है।
- एयरपोर्ट पर इंस्ट्रूमेंट लैंडिंग सिस्टम (आईएलएस) और उन्नत एयरफील्ड लाइटिंग सहित आधुनिक नेविगेशन सिस्टम हैं जो हर मौसम में दिन-रात संचालन में कुशल है।
- हवाई अड्डे को प्रति वर्ष 2.5 लाख मीट्रिक टन से अधिक माल ढुलाई के लिए तैयार किया गया है, जिसे लगभग 18 लाख मीट्रिक टन तक बढ़ाया जा सकता है।
- एयरपोर्ट को सड़क, रेल, मेट्रो और क्षेत्रीय परिवहन प्रणालियों से जुड़ाव के साथ एक बहु-मोडल परिवहन केंद्र के रूप में विकसित किया है।

11,200 करोड़ रुपये के कुल लागत से इस एयरपोर्ट को विकसित किया गया है।

1.20 करोड़
यात्री प्रति वर्ष होगी प्रारंभिक चरण में हवाई अड्डे की यात्री संचालन क्षमता जो हवाई अड्डे के पूर्ण विकसित होने पर सात करोड़ तक पहुंच जाएगी।

3,900
मीटर लंबा है एयरपोर्ट का रनवे जो बड़े आकार के विमानों के संचालन में सक्षम है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि अकेले पश्चिमी उत्तर प्रदेश में ही हाल के हफ्तों में यह चौथी बड़ी परियोजना है जिसका या तो उद्घाटन किया गया है या नींव रखी गई है। इस दौरान नोएडा में एक बड़ी सेमीकंडक्टर फैक्ट्री की नींव रखी गई, देश की पहली दिल्ली-मेरठ नमो भारत ट्रेन ने रफ्तार पकड़ी और मेरठ मेट्रो का विस्तार हुआ। सेमीकंडक्टर फैक्ट्री भारत को प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बना रही है। मेरठ मेट्रो और नमो भारत रेल तेज और स्मार्ट संपर्क का माध्यम बन रही हैं। जेवर एयरपोर्ट पूरे उत्तर भारत को विश्व से जोड़ रहा है।

यह क्षेत्र अब दो प्रमुख माल ढुलाई गलियारों का केंद्र बन रहा है। विशेष रेल पटरियां मालगाड़ियों के लिए बिछाई गई हैं, जिनसे उत्तर भारत का बंगाल और गुजरात के समुद्रों से संपर्क बढ़ा है। साथ ही दादरी वह महत्वपूर्ण केंद्र है जहां ये दोनों गलियारे मिलते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि यहां के किसान अपनी उपज और उद्योग अपने उत्पादन को सड़क और वायुमार्ग के माध्यम से विश्व के हर कोने तक तेजी से पहुंचा सकते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि इस तरह का बहुआयामी संपर्क उत्तर प्रदेश को दुनिया भर के निवेशकों के लिए एक प्रमुख आकर्षण बना रहा है।

भारत की कच्चे तेल पर निर्भरता कम करने में गन्ना किसानों के योगदान को स्वीकार करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने गन्ने से उत्पादित इथेनॉल की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि इथेनॉल उत्पादन में वृद्धि और पेट्रोल में इसके मिश्रण के बिना, भारत को प्रतिवर्ष लगभग साढ़े चार करोड़ बैरल (लगभग 700 करोड़ लीटर) अतिरिक्त कच्चे तेल का आयात करना पड़ता। इथेनॉल से न केवल देश को लाभ हुआ है, बल्कि किसानों को भी बहुत फायदा हुआ है। इससे लगभग 1.5 लाख करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा की बचत हुई है। ■

कार्यक्रम की थीम

'सुपोषित और शिक्षित भारत से विकसित भारत की ओर'

राष्ट्रपति का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

अवसर सृजित करने का महत्वपूर्ण साधन शिक्षा

बच्चे राष्ट्र के भविष्य हैं और उन्हें पौष्टिक भोजन एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले, यह अत्यंत आवश्यक है। यही कारण है कि सरकार ने बच्चों को पर्याप्त पोषण और बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के उद्देश्य से अनेक पहल की हैं। कुपोषण का समाधान और उन्हें शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करने की इसी कड़ी में अक्षय पात्र संगठन पिछले 25 वर्षों से निरंतर स्कूलों में मध्याह्न भोजन पहुंचा रही है। 17 मार्च को इस फाउंडेशन के पांच अरबवें भोजन वितरण के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु हुईं शामिल ...

उपलब्ध अवसरों की दिशा निर्धारित करने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है यही शिक्षा का मार्ग भी प्रशस्त करती है। यह परिवर्तन और सशक्तीकरण का एक प्रभावी माध्यम है। सशक्तीकरण और क्षमता निर्माण की प्रक्रिया बच्चों के स्कूल जाने के आरम्भ के क्षण से ही आकार लेना शुरू कर देती है। स्कूल बच्चों को दैनिक जीवन की चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने के साथ ही जिम्मेदार, कर्तव्यनिष्ठ नागरिक बनने के लिए आवश्यक कौशल एवं अनुभव प्रदान करते हैं। राष्ट्रपति भवन सांस्कृतिक केंद्र में अक्षय पात्र फाउंडेशन के पांच अरबवें भोजन वितरण के उपलक्ष्य में आयोजित एक कार्यक्रम में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने अक्षय पात्र फाउंडेशन की सराहना की जो पिछले 25 वर्षों से स्कूलों में मध्याह्न भोजन पहुंचा रहा है। उन्होंने कहा कि शैक्षिक उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए पांच अरब भोजन परोसना अक्षय पात्र फाउंडेशन की उल्लेखनीय उपलब्धि है।

सबकी साझा जिम्मेदारी बच्चों का उज्ज्वल भविष्य

बच्चों का सुरक्षित और उज्ज्वल भविष्य केवल सरकार का उत्तरदायित्व नहीं है, बल्कि यह हर नागरिक की साझा जिम्मेदारी

पोषण और स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के उद्देश्य से कई पहल

केंद्र सरकार ने गर्भवती माताओं और बच्चों को पर्याप्त पोषण और बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के उद्देश्य से अनेक महत्वपूर्ण पहल की हैं। प्रधानमंत्री पोषण योजना के अंतर्गत क्रियान्वित विद्यालय में दोपहर के भोजन कार्यक्रम से अभिभावकों को अपने बच्चों को विद्यालय भेजने के लिए महत्वपूर्ण प्रोत्साहन मिला है। अनेक अध्ययनों से यह साबित हुआ है कि इस कार्यक्रम से बच्चों के विद्यालय में नामांकन, उपस्थिति और स्कूल में बने रहने की दर में वृद्धि हुई है। साथ ही, उनकी सीखने की क्षमता और शैक्षणिक प्रदर्शन में भी उल्लेखनीय सुधार हुआ है। अक्षय पात्र फाउंडेशन 'समग्र शिक्षा अभियान' के उद्देश्यों को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, जिसका लक्ष्य वर्ष 2030 तक सभी बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण और समावेशी शिक्षा सुनिश्चित करना है।

अक्षय पात्र फाउंडेशन
राष्ट्र के युवाओं का पोषण

24 लाख से ज्यादा बच्चों को हर दिन गर्म और पौष्टिक भोजन।

19 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों तक पहुंच।

- 23,000 से अधिक स्कूलों और आंगनवाड़ियों के साथ साझेदारी।
- हर भोजन के माध्यम से आशा, पोषण और शिक्षा पहुंचाना।

पीएम पोषण योजना

12 करोड़ से अधिक बच्चों को हर दिन परोसा जाता है भोजन, 11 लाख से अधिक सरकारी स्कूलों में।

है। जब शिक्षक, माता-पिता, सामाजिक संगठन, कॉर्पोरेट जगत और समाज के सभी वर्ग मिलकर काम करते हैं, तभी हम आने वाली पीढ़ी के लिए एक मजबूत नींव रख सकते हैं। राष्ट्रपति ने कहा कि हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि प्रत्येक बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, पौष्टिक भोजन, अच्छा स्वास्थ्य और स्वच्छ एवं सुरक्षित वातावरण मिले। ये मूलभूत तत्व बच्चों के सर्वांगीण विकास को संभव बनाते हैं।

राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के निर्माता बच्चे

बच्चे केवल निशुल्क भोजन कार्यक्रम के लाभार्थी नहीं हैं। वे राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के निर्माता हैं। राष्ट्रपति ने कहा कि आज बच्चों को जो पौष्टिक भोजन मिल रहा है, वह राष्ट्र की मानव पूंजी में निवेश है। स्वस्थ, शिक्षित और ऊर्जावान बच्चे भारत के कार्यबल का निर्माण करेंगे और वर्ष 2047 तक 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

राष्ट्रपति ने आचार्य श्रील प्रभुपाद को किया याद

अक्षय पात्र फाउंडेशन कार्यक्रम के अवसर पर राष्ट्रपति ने इस्कॉन के संस्थापक-आचार्य श्रील प्रभुपाद को याद किया। उन्होंने कहा कि मैं इस्कॉन के संस्थापक-आचार्य श्रील प्रभुपाद जी को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं जिन्होंने ऐसे समाज की कल्पना की जहां कोई भी व्यक्ति भूखा नहीं रहे। उन्होंने भारतीय संस्कृति की अन्नदान की परंपरा को विश्व भर में पहुंचाया और बिना किसी भेदभाव के निशुल्क भोजन वितरण को प्रोत्साहित किया। ऐसी दूरगामी सोच रखने वाले महान विभूतियों के कार्यों का मधुर फल अनेक भावी पीढ़ियों को मिलता है। आज इसी सोच के साथ सरकार द्वारा प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के माध्यम से लगभग 80 करोड़ लोगों को निशुल्क अनाज उपलब्ध कराया जा रहा है।

सशक्त ग्रामीण, सशक्त पंचायत सतत विकास का मजबूत आधार

पंचायत के पास अब सटीक जानकारी

स्वामित्व योजना से पहले, मध्य प्रदेश के सीहोर में बिलकिसगंज ग्राम पंचायत हाथ से बनाए गए मानचित्रों पर निर्भर थी। सेवा लागत का अनुमान लगाना तक चुनौतीपूर्ण था। स्वामित्व मानचित्रों के बाद पंचायत के पास अब सटीक, डेटा-संचालित जानकारी है। स्वामित्व की वजह से विभिन्न गतिविधियों के लिए भूमि आवंटन और विकास नियोजन में सुधार हुआ है। भूमि का प्रभावी उपयोग और बेहतर सेवा वितरण संभव हुआ है।

प्रॉपर्टी कार्ड की वजह से जमीन विवाद खत्म

जम्मू-कश्मीर के सांबा जिले के स्वामित्व लाभार्थी वीरेंद्र कुमार प्रॉपर्टी कार्ड मिलने से बहुत खुश हैं। उनके गांव में कई पीढ़ी यानी 100 साल से भी ज्यादा समय से लोग रह रहे हैं लेकिन जमीन के कागजात नहीं थे। अब स्वामित्व कार्ड मिलने से लोग खुश हैं। वीरेंद्र बताते हैं कि स्वामित्व कार्ड मिलने से उनका जमीन विवाद सुलझ गया है। मैं इस कार्ड की वजह से जमीन गिरवी रखकर बैंक से लोन ले सकता हूं। घर की मरम्मत करवा सकता हूं। गांव में जमीन विवाद के झगड़े काफी कम हो गए हैं।

स्वामित्व कार्ड से ऋण मिलने में हुई आसानी

महाराष्ट्र के नागपुर के स्वामित्व लाभार्थी रोशन संभा पाटिल ने बताया कि उन्हें यह कार्ड कैसे मिला, इससे उन्हें किस तरह मदद मिली और इससे उन्हें क्या लाभ हुआ। रोशन ने बताया कि उनके पास गांव में एक बड़ा, पुराना घर था और संपत्ति कार्ड की मदद से उन्हें 9 लाख का ऋण मिला, जिसका उपयोग उन्होंने अपने घर के पुनर्निर्माण और खेती-सिंचाई में सुधार के लिए किया। इससे उनकी आय और फसल की पैदावार में वृद्धि हुई है, जो उनके जीवन पर स्वामित्व योजना के सकारात्मक प्रभाव को दर्शाता है।

स्वामित्व कार्ड मिलने से बढ़ा आत्मविश्वास

ओडिशा के रायगढ़ की स्वामित्व लाभार्थी गजेंद्र संगीता बताती हैं कि पिछले 60 वर्षों से कोई समुचित दस्तावेज नहीं थे। अब स्वामित्व कार्ड मिलने से उनका आत्मविश्वास बढ़ा है। वह ऋण लेकर अपने सिलाई व्यवसाय को आगे बढ़ाना चाहती हैं।

भारत की ग्रामीण आबादी, पंचायत और वहां की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए 6 वर्ष पूर्व पंचायती राज दिवस पर 24 अप्रैल को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू की गई स्वामित्व योजना से जुड़ी यह कहानियां बता रही हैं कि यह ग्रामीण भारत के सपने को किस तरह से नया आकार दे रही है। योजना लॉन्च करते समय पीएम मोदी ने कहा था कि इस योजना से प्रोपर्टी को लेकर भ्रम की स्थिति दूर होगी, गांव

स्वामित्व योजना के मुख्य उद्देश्य

- संपत्तियों का मौद्रीकरण सुगम बनाना।
- बैंक लोन मिलना आसान करना।
- संपत्ति संबंधी विवादों को कम करना।
- व्यापक ग्रामीण स्तरीय योजनाएं बनाना, जो सही मायने में ग्राम स्वराज हासिल करने और ग्रामीण भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में पहला कदम है।

संपत्ति अधिकार का मिला कार्ड

31 राज्य व केंद्र शासित प्रदेश योजना में शामिल।

3.45 लाख से अधिक गांव सर्वेक्षण के लिए अधिसूचित।

3.29 लाख गांव में ड्रोन सर्वेक्षण का काम पूरा।

3.10 करोड़ संपत्ति कार्ड 1.87 लाख गांव के तैयार किए गए।

2.65 करोड़ से अधिक संपत्ति कार्ड वितरित।

नोट : आंकड़े 11 मार्च, 2026 तक।

"देश ने ठान लिया है कि गांव और गरीब को आत्मनिर्भर बनाना, भारत के सामर्थ्य की पहचान बनाना है। इस संकल्प की सिद्धि के लिए स्वामित्व योजना की भूमिका बहुत बड़ी है।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

में विकास योजनाओं की बेहतर प्लानिंग में और ज्यादा मदद मिलेगी। इससे शहरों की ही तरह गांवों में भी बैंकों से लोन मिलने का रास्ता और आसान हो जाएगा। यह सभी लाभ सफलता की कहानियों में लाभार्थी खुद गिनवा रहे हैं। भूमि स्वामित्व की सदियों पुरानी चुनौतियों को विकास और सशक्तीकरण के अवसरों में बदल रही है। जमीन विवादों को सुलझा रही है। ग्रामीण भारत में लोगों के पास जो संपत्ति हैं, उसे आर्थिक प्रगति के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में बदल रही है। हाई-टेक ड्रोन सर्वेक्षण से लेकर डिजिटल संपत्ति कार्ड तक, यह योजना केवल नक्शे और सीमाओं तक सीमित नहीं है बल्कि यह सपनों को नई ऊंचाई दे रही है। नवाचार से जुड़े इस बदलाव को जैसे-जैसे गांव अपनाते हैं, उस गांव के लिए यह सरकारी पहल काफी बढ़कर लाभकारी साबित हो रहा है। यह आत्मनिर्भरता, बेहतर योजना और एक मजबूत, एकीकृत ग्रामीण भारत के लिए परिवर्तनकारी साबित हो रहा है।

भारत की स्वतंत्रता के बाद नीति निर्देशक सिद्धांतों के अंतर्गत संविधान के अनुच्छेद 40 में कहा गया है कि राज्य, ग्राम पंचायतों

पंचायती राज की शुरुआत... 24 अप्रैल को है पंचायती राज दिवस

- भारतीय पंचायती राज व्यवस्था की जड़ें देश के इतिहास और संस्कृति में है। भारत के सबसे पुराने पवित्र ग्रंथों और ऐतिहासिक स्रोतों में से एक ऋग्वेद में गांव के समुदायों का उल्लेख है जो हजारों साल से स्वशासित थे।
- 1957 में पंचायती राज की स्थापना में ऐतिहासिक सफलता उस समय मिली जब बलवंत राय मेहता की अध्यक्षता वाली टीम ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि सामुदायिक कामों में लोगों की भागीदारी वैधानिक प्रतिनिधि निकायों के माध्यम से संयोजित की जानी चाहिए।
- हालांकि, सही मायने में आजादी के बाद पंचायती राज व्यवस्था सबसे पहले 2 अक्टूबर, 1959 को राजस्थान में, जयपुर से 260 किलोमीटर दूर नागौर से लागू की गई थी।
- वर्ष 1978 में अशोक मेहता समिति ने रिपोर्ट में सिफारिश की कि पंचायती राज को संविधान में शामिल किया जाए।
- केंद्र सरकार ने 22 और 23 दिसंबर, 1992 को पंचायत और नगरपालिका से संबंधित दो विधेयक संसद के दोनों सदन में पेश किए। राष्ट्रपति से स्वीकृति के बाद यह संविधान (73वां संशोधन) अधिनियम, 1992 के रूप में 24 अप्रैल, 1993 में लागू किया गया।
- संविधान (74वां संशोधन) अधिनियम, 1992 के रूप में 1 जून, 1993 को लागू किया गया जिसमें स्थानीय निकायों के लिए प्रावधान किए गए।

आज 2.6 लाख पंचायतें लोगों का सामाजिक और राजनीतिक सशक्तीकरण सुनिश्चित कर भारतीय लोकतंत्र की नींव मजबूत कर रही है। इसमें 24.24 लाख निर्वाचित प्रतिनिधि हैं जिसमें लगभग 49.55% महिलाएं हैं।

को संगठित करने और उन्हें ऐसी शक्ति एवं अधिकार प्रदान करेगा जो उन्हें स्व-शासन की इकाइयों के रूप में काम करने में सक्षम बनाने के लिए जरूरी हों। शुरुआत से स्व-शासन को पंचायती राज का सार माना गया है। यह पंचायती राज व्यवस्था 1992 में किए गए एक संविधान संशोधन के 1993 में लागू किए जाने के साथ संविधान का हिस्सा बनी। पुरानी व्यवस्था में दशकों तक, भारत में कई ग्रामीण घरों और जमीनों का विधिवत रिकॉर्ड नहीं रखा गया था। कानूनी दस्तावेजों के अभाव में, लोग स्वामित्व साबित नहीं कर पाते थे और न ही बैंक ऋण या सरकारी सहायता प्राप्त करने के लिए अपनी संपत्ति का उपयोग कर पाते थे। रिकॉर्ड की इस कमी ने ग्रामीण क्षेत्रों के आर्थिक विकास को धीमा कर दिया और भूमि विवादों को जन्म दिया। इन सभी दिक्कतों को दूर करने के लिए 24 अप्रैल, 2020 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वामित्व योजना की शुरुआत की जो आज ग्रामीण भारत की आर्थिक प्रगति को नई गति दे रहा है।

वित्त मंत्रालय के जनसुरक्षा पोर्टल के आंकड़े बताते हैं कि फरवरी, 2026 तक 10,913 संपत्ति कार्ड धारकों को करीब 1,680 करोड़ रुपये के लोन वितरित किए जा चुके हैं। पंचायती राज मंत्रालय के अनुसार संपत्ति कार्ड को लेकर राज्यों से सफलता की कई जानकारी मिली हैं जिनमें स्वामित्व योजना के लाभार्थियों ने गृह निर्माण, वाहन खरीद, व्यवसाय विस्तार, डेयरी व्यवसायी के विस्तार के लिए स्वामित्व कार्ड का उपयोग करके बैंकों से लोन लिए हैं। ■

जनता का हित सर्वोपरि

प्रधानमंत्री का संसद में संबोधन देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव और ईरान-इजरायल-अमेरिका के बीच जारी संघर्ष ने वैश्विक स्तर पर चिंता बढ़ा दी है। ऐसे विकट समय में जब वैश्विक व्यवस्था डगमगा रही है तब भारत ने एक बार फिरअपनी सूझबूझ, संयम से दूरदर्शिता का परिचय दिया है। संकट की आहट मिलते ही देश ने न केवल अपनी तैयारियों को सुदृढ़ किया, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया कि किसी प्रकार की घबराहट या अस्थिरता जनजीवन को प्रभावित न कर सके। कोविड काल में भारत ने ऐसा करके दिखाया है, इसलिए वर्तमान संकट पर केंद्र सरकार ने सतत निगरानी के लिए अंतर-मंत्रालयी समिति बनाई जो एक ओर रोजाना देश को जानकारी दे रही है, तो दूसरी ओर संसद के दोनों सदनों के माध्यम से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्र को संदेश दिया कि भारत केवल चुनौतियों का सामना ही नहीं करता, बल्कि उन्हें अवसर में बदलने की क्षमता भी रखता है, एक ऐसा राष्ट्र, जो हर संकट में और अधिक सशक्त होकर उभरता है...

पश्चिम एशिया में चल रहे संघर्ष और इसकी वजह से आई चुनौतियों से विश्व के बड़े हिस्से में स्थिति चिंताजनक बनी हुई है। युद्ध की वजह से पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था और लोगों के जीवन पर विपरीत असर पड़ रहा है। भारत के सामने भी इस युद्ध ने अप्रत्याशित चुनौतियां खड़ी कर दी हैं। यह चुनौती आर्थिक, राष्ट्रीय सुरक्षा और मानवता से जुड़ी भी है। ऐसा इसलिए क्योंकि युद्धरत और युद्ध प्रभावित देशों के साथ भारत के व्यापक और व्यापारिक रिश्ते हैं। जिस क्षेत्र में युद्ध हो रहा है वो दुनिया के दूसरे देशों के साथ हमारे व्यापार का भी महत्वपूर्ण रास्ता है। विशेष रूप से कच्चे तेल और गैस की जरूरतों का एक बड़ा हिस्सा

भारतीयों की सुरक्षा प्राथमिकता

जब से युद्ध शुरू हुआ है, तब से ही प्रभावित देशों में हर भारतीय को जरूरी मदद दी जा रही है। पीएम नरेंद्र मोदी ने खुद पश्चिम एशिया के ज्यादातर देश के राष्ट्र अध्यक्षों के साथ दो राउंड फोन पर बात की है। सभी ने भारतीयों की सुरक्षा का पूरा आश्वासन दिया है। प्रभावित देशों में जितने भी मिशन हैं वो निरंतर भारतीयों की मदद करने में जुटे हैं। वहां काम करने वाले भारतीय हों या फिर जो टूरिस्ट वहां गए हैं, सभी को हर संभव मदद दी जा रही है। भारत में और अन्य प्रभावित देशों में 24/7 कंट्रोल रूम और आपातकालीन हेल्पलाइन स्थापित की गई है। युद्ध शुरू होने के बाद से लेकर अब तक, 3 लाख 75 हजार से अधिक भारतीय सुरक्षित देश लौट चुके हैं। ईरान से ही अभी तक लगभग 1,000 भारतीय सुरक्षित वापस लौटे हैं। इनमें 700 से अधिक मेडिकल की पढ़ाई करने वाले युवा हैं।

यही क्षेत्र पूरा करता है। यह क्षेत्र एक और कारण से भी अहम है, लगभग एक करोड़ भारतीय खाड़ी देशों में रहते हैं और वहां काम करते हैं। वहां समंदर में जो व्यापारिक जहाज चलते हैं, उनमें भारतीय क्रू मेंबर की संख्या भी अधिक है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि ऐसे अलग-अलग कारणों के चलते भारत की चिंताएं स्वाभाविक रूप से अधिक हैं, इसलिए यह आवश्यक है कि भारत की संसद से, इस संकट को लेकर एकमत और एकजुट आवाज दुनिया में जाए।

सामान्य परिवारों को हो कम से कम परेशानी

भारत में बड़ी मात्रा में कच्चा तेल, गैस और फर्टिलाइजर जैसी अनेक जरूरी चीजें होर्मुज स्ट्रेट के रास्ते से आती हैं। युद्ध के बाद से होर्मुज स्ट्रेट में जहाजों का आना-जाना बहुत चुनौतीपूर्ण हो गया है। बावजूद इसके, केंद्र सरकार का यह प्रयास रहा है कि पेट्रोल, डीजल और गैस की सप्लाई ज्यादा प्रभावित न हो। देश के सामान्य परिवारों को परेशानी कम से कम हो, इस पर फोकस रहा है। देश अपनी जरूरत का 60% एलपीजी आयात करता है, इसकी सप्लाई में अनिश्चितता के कारण सरकार ने एलपीजी के घरेलू उपयोग को प्राथमिकता दी है। साथ ही देश में ही एलपीजी के उत्पादन को भी बढ़ाया जा रहा है। पेट्रोल डीजल की सप्लाई पूरे देश में सुचारू रूप से होती रहे, इस पर भी लगातार काम किया गया है। भारत 11 वर्ष पहले क्रूड ऑयल, एलएनजी, एलपीजी जैसी ऊर्जा 27 देशों से आयात करता था, वहीं आज भारत 41 देशों से ऊर्जा आयात करता है। आज भारत के पास 53 लाख मीट्रिक टन से अधिक का रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार और 65 लाख मीट्रिक टन से अधिक के रिजर्व की व्यवस्था पर काम कर रहा है। तेल कंपनियों के पास जो रिजर्व रहता है, वो अलग है। सरकार अलग-अलग देशों के सप्लायर के साथ भी लगातार संपर्क में है। प्रयास यह है कि जहां से संभव हो, वहां से तेल और गैस की सप्लाई होती रहे। भारत सरकार गल्फ और आसपास के शिपिंग रूट्स पर निरंतर नजर बनाए हुए हैं। सरकार का प्रयास है कि तेल, गैस, फर्टिलाइजर, ऐसे हर जरूरी सामान से जुड़े जहाज भारत तक सुरक्षित पहुंचे।

ऊर्जा, आधुनिक अर्थव्यवस्था की रीढ़

आज के समय में ऊर्जा, आधुनिक अर्थव्यवस्था की रीढ़ है और वैश्विक ऊर्जा जरुरत को पूरा करने वाला एक बड़ा स्रोत पश्चिम एशिया है। दुनिया भर की अर्थव्यवस्था वर्तमान संकट से प्रभावित हो रही है और भारत पर इसका कम से कम दुष्प्रभाव हो, इसके लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। सरकार इसके शॉर्ट टर्म, मीडियम टर्म और लांग टर्म ऐसे हर असर के लिए एक रणनीति के साथ काम कर रही है। भारत सरकार ने एक इंटर मिनिस्टीरियल ग्रुप भी बनाया है। यह ग्रुप हर रोज मिलता है और इंपोर्ट एक्सपोर्ट में आने वाली हर दिक्कत का आकलन करता है। देश के किसानों ने अन्न के भंडार भर रखे हैं, इसलिए भारत के पास पर्याप्त खाद्यान्न है। सरकार ने बीते सालों में आपात स्थिति से निपटने के लिए खाद की पर्याप्त व्यवस्था भी की है। कोरोना और उस समय के युद्धों के दौरान, उस समय भी ग्लोबल सप्लाई चेन में व्यवधान आ गई थी। दुनिया

कोयला का रिकॉर्ड उत्पादन बढ़ी नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता

आने वाले समय में बढ़ती गर्मी के साथ बिजली की मांग बढ़ती जाएगी। फिलहाल देश के सभी पावर प्लांट्स के पर्याप्त कोल स्टॉक उपलब्ध हैं। भारत में लगातार दूसरे साल 100 करोड़ टन कोयला उत्पादन करने का रिकॉर्ड बनाया है। पावर जेनरेशन से लेकर पावर सप्लाई तक के सभी सिस्टम की निरंतर मॉनिटरिंग भी की जा रही है और सरकार की तैयारियां उसको रिन्यूएबल एनर्जी से अभी मदद मिली है। बीते दशक में रिन्यूएबल एनर्जी की तरफ देश ने बड़े कदम उठाए हैं। टोटल इंस्टॉल पावर जेनरेशन कैपेसिटी का आधा हिस्सा रिन्यूएबल सोर्स से आता है। कुल रिन्यूएबल क्षमता आज 250 गीगावॉट के ऐतिहासिक आंकड़े को पार कर गई है। बीते 11 वर्षों में देश ने अपनी सोलर पावर कैपेसिटी करीब तीन गीगावाट से बढ़कर 140 गीगावाट तक पहुंच गई है।

पश्चिम एशिया के सभी नेताओं से पीएम मोदी ने की है बात

पश्चिम एशिया में चल रहे संघर्ष पर भारत ने पहले ही अपनी गहरी चिंता व्यक्त की है। प्रधानमंत्री मोदी ने स्वयं पश्चिम एशिया के सभी संबंधित नेताओं से बातचीत की है। सभी से तनाव को कम करने और इस संघर्ष को खत्म करने का आग्रह किया है। भारत ने नागरिकों, एनर्जी और ट्रांसपोर्ट से जुड़े इंफ्रास्ट्रक्चर पर हमलों का विरोध किया है। कमर्शियल जहाजों पर हमला और होर्मुज स्ट्रेट जैसे अंतरराष्ट्रीय जलमार्ग में रुकावट अस्वीकार्य है। भारत डिप्लोमेसी के जरिए युद्ध के माहौल में भी, भारतीय जहाजों के सुरक्षित आवागमन के लिए निरंतर प्रयास कर रहा है।

के बाजार में यूरिया की एक बोरी तीन हजार रुपये तक पहुंच गई थी, लेकिन भारत के किसानों को वही बोरी 300 रुपये से भी कम कीमत पर उपलब्ध कराई गई। पिछले एक दशक में देश में 6 यूरिया प्लांट शुरू किए गए हैं, इससे सालाना 76 लाख मीट्रिक टन से अधिक की यूरिया उत्पादन क्षमता जुड़ी है। इस दौरान डीएपी और एनपीकेएस जैसी खाद का घरेलू उत्पादन भी करीब 50 लाख मीट्रिक टन बढ़ाया गया है। यही नहीं सरकार किसानों को प्राकृतिक खेती के लिए भी प्रोत्साहित कर रही है।

हर चुनौती का करना है मुकाबला

इस युद्ध के कारण, दुनिया में जो कठिन हालात बने हैं, उनका प्रभाव लंबे समय तक बने रहने की आशंका है, इसलिए हमें तैयार और एकजुट रहना होगा। धीरज और संयम के साथ हर चुनौती का मुकाबला करना है। हालात का फायदा उठाने वाले झूठ फैलाने का प्रयास करेंगे, ऐसे लोगों की कोशिशों को सफल नहीं होने देना है। देश के सभी राज्य सरकारों से भी पीएम मोदी ने आग्रह किया है कि ऐसे समय में कालाबाजारी, जमाखोरी करने वाले एक्टिव हो जाते हैं, इसके लिए कड़ी निगरानी जरूरी है। ■

पश्चिम एशिया संकट से मिलकर निपटेगी

'टीम इंडिया'

पश्चिम एशिया में युद्ध की स्थिति के कारण वैश्विक अनिश्चितता के बीच देश 'टीम इंडिया' के रूप में मिलकर काम कर रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विश्वास व्यक्त किया कि 'टीम इंडिया' इस स्थिति से सफलतापूर्वक निपट लेगी। अभी तक की इस स्थिति से निपटने के लिए केंद्र सरकार की ओर से उठाए गए कदमों की राज्यों के मुख्यमंत्री और उप राज्यपाल के साथ बैठक में सराहना की गई और केंद्र के साथ मिलकर काम करने की मुख्यमंत्रियों ने दोहराई प्रतिबद्धता...

पश्चिम एशिया के हाल के घटनाक्रम और भारत पर संभावित प्रभाव की तैयारियों की समीक्षा के लिए 27 मार्च को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में मुख्यमंत्रियों और उप राज्यपालों के साथ एक अहम बैठक हुई। पश्चिम एशिया की मौजूदा स्थिति का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत के पास इस तरह के वैश्विक व्यवधान से निपटने का पहले का अनुभव है। उन्होंने कोविड-19 महामारी के दौरान किए गए सामूहिक प्रयासों को याद किया, जब केंद्र और राज्यों ने 'टीम इंडिया' के रूप में मिलकर आपूर्ति श्रृंखलाओं, व्यापार और दैनिक जीवन पर प्रभाव को कम करने के लिए काम किया था। पीएम मोदी ने कहा कि यही सहयोग और समन्वय की भावना वर्तमान परिस्थितियों से निपटने में भारत की सबसे बड़ी ताकत है।

पीएम मोदी ने कहा कि 3 मार्च से एक अंतर-मंत्रालयी समूह सक्रिय है, जो दैनिक आधार पर स्थिति की समीक्षा कर रहा है और समय पर निर्णय ले रहा है। सरकार की प्राथमिकता आर्थिक और व्यापारिक स्थिरता बनाए रखना, ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करना, नागरिकों के हितों की रक्षा करना और उद्योग एवं आपूर्ति श्रृंखलाओं को मजबूती प्रदान करना है। प्रभावी क्रियान्वयन राज्य स्तर पर ही होता है लिहाजा त्वरित और सुव्यवस्थित प्रतिक्रिया के लिए केंद्र और राज्यों के बीच निरंतर संवाद और समन्वय, समय पर जानकारी साझा करने और संयुक्त निर्णय लेने की बात बैठक में कही गई।

जमाखोरी और मुनाफाखोरी के खिलाफ कड़े कदम...

पीएम मोदी ने राज्यों से आपूर्ति श्रृंखलाओं का सुचारू संचालन सुनिश्चित करने तथा जमाखोरी व मुनाफाखोरी के खिलाफ कड़े कदम उठाने के लिए कहा। इस संकट की वजह से उत्पन्न होने वाले किसी भी तरह के व्यवधानों को रोकने के लिए राज्य और जिला स्तर पर कंट्रोल रूम सक्रिय करने और प्रशासनिक सतर्कता

उत्पाद शुल्क कम किया गया...

बैठक के दौरान रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने बताया कि सरकार इस संकट से निपटने के लिए सक्रिय रूप से काम कर रही है। एलपीजी की समय पर उपलब्धता सुनिश्चित करने और पेट्रोल व डीजल पर उत्पाद शुल्क कम करने जैसे सकारात्मक कदम उठाए गए हैं। वर्तमान स्थिति से निपटने के लिए सभी राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों और केंद्र की ओर से सामूहिक कार्रवाई किए जाने की आवश्यकता पर भी जोर दिया।

मुख्यमंत्रियों ने कहा स्थिति स्थिर बनी हुई है...

सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने भरोसा जताया कि स्थिति स्थिर बनी हुई है, पेट्रोल, डीजल और एलपीजी की पर्याप्त उपलब्धता है। आवश्यक वस्तुओं की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए निरंतर निगरानी तंत्र मौजूद हैं। मुख्यमंत्रियों ने ईंधन पर उत्पाद शुल्क घटाने के निर्णय का स्वागत करते हुए कहा कि इससे वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच नागरिकों को महत्वपूर्ण राहत मिलेगी। मुख्यमंत्रियों ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के लिए वाणिज्यिक एलपीजी आवंटन को संकट से पहले के 50% स्तर से बढ़ाकर 70% करने के निर्णय का भी स्वागत किया।

बनाए रखने की बात की गई। विशेष रूप से उर्वरक के भंडारण और वितरण की निगरानी सहित कृषि क्षेत्र में पूर्व नियोजन की आवश्यकता पर भी जोर दिया, ताकि आगामी खरीफ मौसम में किसानों को किसी प्रकार की कठिनाई न हो।

अफवाह पर ध्यान न दें...

गलत सूचना के प्रसार और अफवाहों के प्रति सतर्क रहने की चेतावनी देते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि समय पर सटीक और विश्वसनीय जानकारी का प्रसार भय फैलने से रोकने के लिए आवश्यक है। उन्होंने ऑनलाइन धोखाधड़ी और नकली एजेंटों के प्रति भी सतर्क रहने की सलाह दी। आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता के संबंध में आश्वासन नागरिकों में अनावश्यक भय फैलने से रोकने में मदद करेगा। जिन राज्यों के नागरिक पश्चिम एशिया में हैं, वे प्रभावित परिवारों की सहायता और समय पर जानकारी के प्रवाह को सुनिश्चित करने के लिए हेल्पलाइन सक्रिय करें, नोडल अधिकारियों की नियुक्ति करें और जिला स्तर पर सहायता प्रणाली स्थापित करें।

हाल के वर्षों में उठाए गए कदमों से मिल रही मदद...

भारत की आर्थिक और आपूर्ति प्रणालियों को मजबूत करने की दिशा में हाल के वर्षों में किए गए प्रयास वर्तमान परिस्थितियों में लाभकारी साबित हो रहे हैं। उद्योग और एमएसएमई के साथ निरंतर संवाद बनाए रखने के लिए कहा गया है ताकि उनकी चिंताओं का समाधान हो और उत्पादन व रोजगार में स्थिरता सुनिश्चित हो सके। सभी स्तरों पर मजबूत समन्वय तंत्र की आवश्यकता पर भी जोर दिया। मुख्य सचिवों के स्तर पर नियमित समीक्षा और जिला स्तर पर निरंतर निगरानी की बात कही गई है ताकि बदलती परिस्थितियों का त्वरित और प्रभावी जवाब दिया जा सके।

वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा...

राज्यों से जैव ईंधन, सौर ऊर्जा, गोबरधन पहल, इलेक्ट्रिक मोबिलिटी जैसे वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा देने और पाइप द्वारा प्राकृतिक गैस के कनेक्शनों का विस्तार करने में तेजी लाने के लिए कहा गया है। राज्यों के सक्रिय सहयोग के साथ घरेलू स्तर पर तेल और प्राकृतिक गैस की खोज बढ़ाने के महत्व को भी रेखांकित किया। पीएम मोदी ने विश्वास व्यक्त किया कि 'टीम इंडिया' इस स्थिति से सफलतापूर्वक निपट लेगा। ■

KHELO INDIA खेलो इंडिया का एक दशक

खेल क्रांति का मजबूत रोडमैप

भारत में पहले बच्चों के लिए खेलकूद एक आनंददायक विश्राम था जो होमवर्क और स्कूल के बीच सिमटा हुआ था। खेलों को व्यावहारिक करियर नहीं मानना, एक आम सोच थी। इसका कारण था सीमित खेल इंफ्रास्ट्रक्चर और खेलों की बजाय शिक्षा को प्राथमिकता देने की समाज की सोच। ऐसे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने सोच बदली, खेल में युवाओं के लिए करियर की आकांक्षा पैदा की... आज लद्दाख के साइकिलिस्ट त्सेवांग नोरबू हों, नागालैंड के पैरा एथलीट होतोजे सेमा होकाटो या 2,900 से अधिक खेलो इंडिया एथलीट... खेलो इंडिया दे रहा है ऐसे एथलीटों को नई ऊंचाई...

भारत में खेलो इंडिया योजना- राष्ट्रीय खेल विकास कार्यक्रम लॉन्च कर सरकार खेलों में व्यापक जनसहभागिता और उत्कृष्टता को बढ़ावा दे रही है। इसी उद्देश्य से 22 अप्रैल 2016 को संबंधित एजेंसियों को योजना भेजी गई। 27 सितंबर 2016 को कार्यक्रम में कुछ बदलाव किए गए। इसमें खेल इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण और अपग्रेडेशन, खेल प्रतियोगिताएं और प्रतिभा विकास, फिट इंडिया अभियान एवं खेलों के माध्यम से समावेशिता को बढ़ावा देने की दृष्टि से काम शुरु किया गया। बीते एक दशक में इन क्षेत्रों में देश ने न सिर्फ अनेक उपलब्धियां हासिल की हैं बल्कि बड़े स्तर पर खेल प्रतिभाएं इस योजना के माध्यम से तलाशी गईं। युवाओं को मिले बेहतरीन इंफ्रास्ट्रक्चर, प्रशिक्षण और आर्थिक सहयोग से राष्ट्रगान की शानदार धुन पोडियम पर खिलाड़ियों के साथ अनेक अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में सुनाई दे रही है।

प्रतिभा को निखारने का नया सपोर्ट सिस्टम...

खेलो इंडिया मिशन

खेल का क्षेत्र रोजगार, कौशल और नौकरी के अनेक अवसर प्रदान करता है। यही वजह है कि केंद्र सरकार ने वित्त वर्ष 2026-27 के बजट में खेलो इंडिया मिशन की शुरुआत की घोषणा की है। इस महत्वपूर्ण कदम के तहत प्रतिभा की पहचान, विकास, उत्कृष्टता केंद्र के रूप में बुनियादी ढांचा तैयार करने और निर्माण एवं रोजगार पैदा करने पर ध्यान दिया गया है। प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को शुरुआत से प्रोफेशनल स्तर पर पहुंचने में जो भी सपोर्ट चाहिए होता है, उसका एक इकोसिस्टम खेलो इंडिया मिशन में तैयार किया जाएगा। इस मिशन का लक्ष्य राज्य की योजनाओं के माध्यम से हर जिले में एक खेलो इंडिया प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करना, खेल विज्ञान-खेल मनोविज्ञान, पोषण सहित सुव्यवस्थित उपाय, वास्तविक समय पर निगरानी के लिए डेटा प्लेटफॉर्म और 2036 तक भारत को खेल के अग्रणी राष्ट्रों में शामिल करना है।

अंतरराष्ट्रीय पदक जीतने की संभावना वाले 14 खेलों पर जोर

खेलो इंडिया के तहत केंद्र सरकार ने राज्यों के साथ मिलकर 'एक राज्य-एक खेल' पर जोर दिया है। साथ ही, आने वाले ओलंपिक खेलों में बेहतर प्रदर्शन के लिए 14 खेलों को चुना गया है, जिनमें पदक जीतने की संभावना ज्यादा है। केंद्र सरकार ने राज्यों से कहा है कि खेलो इंडिया के तहत जो भी प्रस्ताव या कार्यक्रम बनाएं जाएं, उनमें इन 14 खेलों को प्राथमिकता दी जाए ताकि इन खेलों में ज्यादा से ज्यादा खिलाड़ी जुड़ें और उनमें किया जा सके बेहतरीन क्षमता का विकास...

मिशन के पांच स्तंभ

- प्रतिभाशाली खिलाड़ी सर्च करने से लेकर प्रोफेशनल स्तर तक पहुंचाने के लिए जरूरी अलग-अलग स्तर के प्रशिक्षण केंद्र बनाए जाएंगे।
- कोच और सहायक कर्मचारियों का विकास किया जाएगा।
- खेल विज्ञान-नई टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल खेल में बढ़ाया जाएगा।
- खेल संस्कृति को बढ़ावा एवं मंच देने के लिए प्रतियोगिताएं और लीग आयोजित किए जाएंगे।
- प्रशिक्षण और प्रतियोगिता के लिए खेल इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास किया जाएगा।

तीरंदाजी, मुक्केबाजी, शूटिंग, बैडमिंटन, कुश्ती, हॉकी, वेटलिफ्टिंग, साइक्लिंग, एथलेटिक्स, टेबल टेनिस, जूडो, तैराकी, फेंसिंग, रोइंग

खेलो इंडिया योजना, टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम (टीओपीएस) और कीर्ति (खेलो इंडिया राइजिंग टैलेंट आइडेंटिफिकेशन) ने एथलीटों के लिए उनकी यात्रा के हर चरण में समर्थन का एक व्यापक ढांचा तैयार किया है। स्कूल, यूनिवर्सिटी, महिला, पैरा एथलीट, ट्राइबल एथलीट स्तर पर खिलाड़ियों को पहचानने और उन्हें निखारने का काम तेज किया गया। इसी का नतीजा है कि बीते एक दशक में खेलों में भारत के प्रदर्शन को स्वर्णिम काल के तौर पर देखा जा सकता है। इसमें ओलंपिक, पैरालिंपिक और एशियाई

खेलो इंडिया में तैयार इंफ्रास्ट्रक्चर

1067
खेलो इंडिया केंद्र अधिसूचित, 750 से ज्यादा जिले कवर

322
अकादमियों को खेलो इंडिया के तहत एथलीटों को प्रशिक्षण के लिए मान्यता।

27,500
से ज्यादा एथलीट ले रहे हैं खेलो इंडिया केंद्रों पर प्रशिक्षण।

344
नए खेल इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट 32 राज्य व केंद्र शासित प्रदेश में स्वीकृत।

3,158 करोड़ रु.
की लागत इन प्रोजेक्ट पर आएगी।

- 17,000 से ज्यादा मैप खेल इंफ्रास्ट्रक्चर, 2,500 से ज्यादा ओलंपिक स्तर के।
- 47,012 एथलीट खेलो इंडिया गेम्स में कर चुके हैं भागीदारी।
- 1,327 कोच और सपोर्ट स्टाफ हैं।
- 23,000 से अधिक खिलाड़ियों को मिला समर्थन।
- 23.68 करोड़ लोग फिट इंडिया कार्यक्रम में हो चुके हैं शामिल।
- 4,50,445 स्कूलों को मिला है फिट इंडिया फ्लैग।

8 गुना हुआ खेलो इंडिया का बजट

2,905 खेलो इंडिया एथलीटों को 22 खेलों में कोचिंग, उपकरण, चिकित्सा देखभाल और मासिक आउट ऑफ पॉकेट भत्ता के तहत वार्षिक 6,28,400 रुपये दिए जा रहे हैं, चाहे वह किसी भी पृष्ठभूमि के हों।

खेलो इंडिया में देशज और पारंपरिक खेल
मल्लखंब, कलारीपयट्टु, गतका, थांग-टा, योगासन और सिलंबम।

"आज खेलो इंडिया, यूनिवर्सिटी गेम्स, खेलो इंडिया यूथ गेम्स, खेलो इंडिया विंटर गेम्स, खेलो इंडिया पैरा गेम्स होते हैं, यानी साल भर, अलग-अलग लेवल पर, लगातार स्पर्धाएं होती रहती हैं। इससे हमारे खिलाड़ियों का आत्मविश्वास बढ़ता है, उनका टैलेंट निखरकर सामने आता है।

–नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

खेलों जैसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर खिलाड़ियों ने रिकॉर्ड तोड़ प्रदर्शन किया है। कल्याणकारी योजना और पहलों के माध्यम से, सरकार न केवल जमीनी स्तर से प्रतिभाओं की पहचान और पोषण कर रही है, बल्कि यह भी सुनिश्चित कर रही है कि एथलीटों को उनके पूरे करियर और उसके बाद भी समर्थन मिले। बुनियादी ढांचे, प्रशिक्षण और एथलीट कल्याण में पर्याप्त निवेश के साथ, भारत खेल के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर अग्रणी बनने की दिशा में आशाजनक रास्ते पर है।

खेलो इंडिया बना खेल विकास के मार्ग का मंच

देश में खेल प्रतिभाओं की खोज करने, प्रतिभा निखारने एवं खेल कौशल प्रदर्शित करने के साथ ही प्रतिभाशाली बच्चों को उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए विकास मार्ग के एक मंच के रूप में खेलो इंडिया ने पहचान बनाई है। खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स 2026 सहित खेलो इंडिया गेम्स के 23 संस्करण आयोजित किए जा चुके हैं। इसमें खेलो इंडिया यूथ गेम्स के 7 संस्करण, खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स के 5 संस्करण, खेलो इंडिया विंटर गेम्स के 5 संस्करण, खेलो इंडिया पैरा गेम्स के 2 संस्करण, खेलो इंडिया

खेल की ये भी योजनाएं

टॉप्स से तैयार हो रहे हैं ओलंपिक के पोडियम खिलाड़ी

टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम (टीओपीएस) वर्ष 2014 से क्रियान्वित की जा रही है। इसका उद्देश्य ओलांपिक और पैरालंपिक खेलों में भारत के पदक जीतने की संभावनाओं को बढ़ाना है। इसमें उत्कृष्ट क्षमता वाले एथलीटों की पहचान कर उन्हें अनुकूलित एंड-टू-एंड सहायता उपलब्ध कराई जाती है। टीओपीएस कोर एथलीटों के लिए 50 हजार रुपये मासिक और टीओपीएस डेवलमेंट एथलीटों के लिए 25 हजार रुपये मासिक आउट ऑफ पॉकेट भत्ता के साथ ही प्रशिक्षण, खेल विज्ञान और सहायता सेवाएं सहित कई तरह की सहायता दी जाती है।

टॉप्स में दी जाने वाली सहायता

51 कोर एथलीट | **52** पैरा कोर एथलीट

130 डेवलमेंट एथलीट

देश में पहली बार खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स

खेलो इंडिया के तहत अभी तक खेलो इंडिया यूथ गेम्स, खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स, खेलो इंडिया विंटर गेम्स, खेलो इंडिया पैरा गेम्स, खेलो इंडिया बीच गेम्स और खेलो इंडिया वाटर स्पोर्ट्स फेस्टिवल आयोजित किए गए थे। इस वर्ष पहली बार खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स की प्रतियोगिताएं 25 मार्च से 6 अप्रैल तक छत्तीसगढ़ के तीन शहरों- रायपुर, जगदलपुर और सरगुजा में आयोजित की गईं। इसमें एथलेटिक्स, फुटबॉल, हॉकी, वेटलिफ्टिंग, तीरंदाजी, तैराकी और कुश्ती की सात पदक के लिए प्रतियोगिताएं हुईं।

"अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेलों में भारत का दबदबा बढ़ाने और स्पोर्टिंग टैलेंट की स्कूल लेवल पर ही पहचान कर उन्हें ट्रेन कर रही है। खेलो इंडिया से लेकर TOPS स्कीम तक, एक पूरा इकोसिस्टम, इसके लिए विकसित किया गया है।"

–नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

बीच गेम्स का 2 संस्करण, खेलो इंडिया वाटर स्पोर्ट्स फेस्टिवल का 1 संस्करण शामिल है। इन खेलों में 60 हजार से अधिक एथलीटों ने भाग लिया है।

34 खेल विधाओं में महिलाओं के लिए खेल लीग

खेलों में महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए खेलो इंडिया महिला लीग आयोजित की जा रही हैं। फरवरी, 2026 तक 34 खेल विधाओं में महिला लीग आयोजित की गईं। महिला एथलीटों के लिए 2,407 प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इसमें 2 लाख से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

जम्मू और कश्मीर के हर जिले में 5 खेलो इंडिया केंद्र

खेलो इंडिया योजना के तहत, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर के हर जिले में सामान्य मानदंडों के अनुसार 5 खेलो इंडिया केंद्र स्थापित करने का प्रावधान अधिसूचित किया गया है। यह जम्मू और कश्मीर के लिए एक विशेष कदम है। अब तक इस केंद्र शासित प्रदेश में 100 खेलो इंडिया केंद्र अधिसूचित किए जा चुके हैं।

बच्चों के बीच खेल प्रतिभा पहचान की पहल 'कीर्ति'

कीर्ति (खेलो इंडिया राइजिंग टैलेंट आइडेंटिफिकेशन) 9 से 18 वर्ष की आयु के बच्चों के बीच खेल प्रतिभा की पहचान और पोषण करने के लिए एक राष्ट्रव्यापी पहल है। देश भर में 174 से अधिक प्रतिभा मूल्यांकन केंद्रों के माध्यम से प्रतिभाओं की पहचान की जा रही है। यह पहल युवा एथलीटों का मजबूत क्रम सुनिश्चित करती है जो भारत को वैश्विक खेलों में अधिक ऊंचाइयों पर ले जा सकते हैं। कीर्ति का लक्ष्य एथलीटों के एक स्थायी और निरंतर समूह का निर्माण करना है ताकि भारत को 2036 तक शीर्ष 10 खेल देश और 2047 तक शीर्ष 5 देश बनने में मदद मिल सके। ■

विश्व धरोहर दिवस : 18 अप्रैल, 2026

विश्व धरोहर में समाहित देश का सार

हमारी विरासत सिर्फ पत्थरों, लिपियों या खंडहरों से नहीं बनी है। यह मंदिर की दीवार की प्रत्येक फुसफुसाहट, प्राचीन किलों की हरेक नक्काशी और पीढ़ियों से चले आ रहे एक-एक लोकगीत में मौजूद है। हर साल 18 अप्रैल को मनाया जाने वाला विश्व धरोहर दिवस हमें याद दिलाता है कि इन कालातीत निधियों की न केवल प्रशंसा की जानी चाहिए, बल्कि उन्हें किया जाना चाहिए संरक्षित...

सांस्कृतिक धरोहर सिर्फ इतिहास नहीं है बल्कि यह मानवता की साझा चेतना है। जब भी हम ऐतिहासिक स्थलों को देखते हैं तो हमारी सोच मौजूदा भू-राजनीतिक कारकों से ऊपर उठ जाती है। **– नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री**

18 अप्रैल को मनाया जाता है विश्व धरोहर दिवस

विश्व धरोहर दिवस हर साल 18 अप्रैल को मनाया जाता है। इसे स्मारकों और स्थलों के लिए अंतरराष्ट्रीय दिवस भी कहा जाता है। यह दिन मानव विरासत का सम्मान और सुरक्षा करने के लिए है। इस दिवस की शुरुआत 1982 में स्मारक और स्थलों पर अंतरराष्ट्रीय परिषद (आईसीओएमओएस) द्वारा की गई थी। बाद में 1983 में यूनेस्को ने आधिकारिक तौर पर इसे अपना लिया।

देश में 44 विश्व धरोहर स्थल

सांस्कृतिक विश्व धरोहर स्थल **36**	प्राकृतिक विश्व धरोहर स्थल **07**
मिश्रित विश्व धरोहर स्थल **01**	

2014 के बाद यूनेस्को विश्व धरोहर सूची में शामिल धरोहर

2021
काकतीय रुद्रेश्वर (रामप्पा) मंदिर, तेलंगाना

2014

पाटन में रानी-की-वाव (रानी की बावड़ी), गुजरात

2014

महान हिमालयी राष्ट्रीय उद्यान, हिमाचल प्रदेश

2016

नालंदा महाविहार का पुरातात्विक स्थल, बिहार

2016

ले कॉर्बुसियर की स्थापत्य कला, चंडीगढ़

2025

भारत के मराठा सैन्य परिदृश्य, महाराष्ट्र

2016

खांगचेंदज़ोंगा राष्ट्रीय उद्यान, सिक्किम

2017

गुजरात का ऐतिहासिक शहर, अहमदाबाद

2018
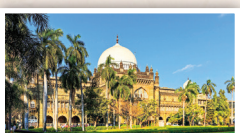
मुंबई का विक्टोरियन व आर्ट डेको शैली का समूह, महाराष्ट्र

2019
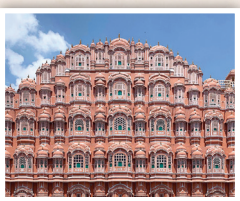
जयपुर शहर, राजस्थान

2021

धोलावीरा: हड़प्पाकालीन शहर, गुजरात

2023

होयसाला के पवित्र समूह, कर्नाटक

2023
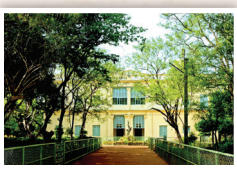
शांति निकेतन, विश्व भारती

2024
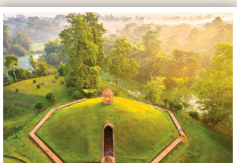
मोइदाम- अहोम राजवंश की पर्वत-दफन प्रणाली, असम

2014 के बाद यूनेस्को प्रतिनिधि सूची में शामिल अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर

जनदियाला गुरु, भारतीय ठठेरों की पीतल व तांबे के बर्तन बनाने की पारंपरिक कला, पंजाब	2014
योग, सभी राज्य	2016
नौरूज, सभी राज्य	2016
कुंभ मेला, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश	2017
कोलकाता में दुर्गा पूजा, पश्चिम बंगाल	2021
गुजरात का गरबा	2023

विश्व धरोहर सूची में शामिल करने के लिए विश्व धरोहर केंद्र को भेजा गया प्रस्ताव

प्राचीन बौद्ध स्थल, सारनाथ (2025-26)

जिंगकिएंगजरी/ल्यू चराई सांस्कृतिक परिदृश्य (2026-27)

पूरी मानवता को मिलेगा

भारत की एआई और सेमीकंडक्टर पहल का लाभ

आज जब दुनिया में भारत के विकास और प्रगति की चर्चा होती है तो 'गुजरात मॉडल' की सराहना की जाती है क्योंकि गुजरात ने दिखाया है कि विकास के लिए कल्याणकारी योजनाएं भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं, जितनी इंफ्रास्ट्रक्चर की परियोजनाएं। इसी कड़ी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 31 मार्च को गुजरात में 20 हजार करोड़ रुपये से अधिक की विकास परियोजनाओं की सौगातें दीं। साथ ही, यहां विरासत से जुड़े कार्यक्रम में भी शामिल हुए और कहा कि 21वीं सदी का भारत केवल बदलाव का साक्षी नहीं, बल्कि बदलाव का नेतृत्व करने के संकल्प के साथ बढ़ रहा है आगे ...

भारत के नेतृत्व का विजन बिल्कुल स्पष्ट है। जब गांव बाजारों से, किसान अवसरों से और युवा रोजगार से जुड़ते हैं, तो वही वास्तविक विकास है। यही वह विजन है जिसकी वजह से देश में इंफ्रास्ट्रक्चर पर लगातार न सिर्फ बड़ी राशि खर्च की जा रही है बल्कि उसे समय से पूरा करके नागरिकों को उसका लाभ भी दिया जा रहा है। इसी कड़ी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 31 मार्च को गुजरात दौरे पर पहुंचे, जहां तीन जनसभा को संबोधित किया। वाव-थराद में गांव को बाजार से जोड़ने वाले रोड और रेल कनेक्टिविटी की अनेक परियोजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन किया तो वहीं रोजगार को बूस्ट देने वाले सेमीकॉन प्लांट का भी

> *भारत का सेमीकंडक्टर उद्योग विभिन्न राज्यों में तेजी से आगे बढ़ रहा है, जिससे अनगिनत युवाओं के लिए नए अवसर पैदा हो रहे हैं। अब हम इन प्रयासों को और अधिक विस्तार देने के लिए 'सेमीकंडक्टर मिशन 2.0' पर काम कर रहे हैं।*
>
> **– नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री**

प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

पीएम मोदी ने नौ संकल्प दोहराए 10वां संकल्प जोड़ा

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा है कि हम व्यक्तिगत आकांक्षा से ऊपर उठकर समाज और राष्ट्र के लक्ष्यों के लिए काम करते हैं, तो देश के विकास को और गति मिल जाती है। इसी भावना के विस्तार में पीएम मोदी ने पूर्व में राष्ट्र के सामने रखे नौ संकल्पों में अपना 10वां संकल्प भी जोड़ा...

1. पहला संकल्प- पानी बचाने का।
2. दूसरा संकल्प- एक पेड़ मां के नाम।
3. तीसरा संकल्प- स्वच्छता का मिशन।
4. चौथा संकल्प- वोकल फॉर लोकल।
5. पांचवा संकल्प- देश दर्शन।
6. छठा संकल्प- नेचुरल फार्मिंग को अपनाना।
7. सातवां संकल्प- हेल्दी लाइफस्टाइल को अपनाना।
8. आठवां संकल्प- योग और खेल को जीवन में लाना।
9. नौवां संकल्प- गरीबों की सहायता करना।
10. दसवां संकल्प- भारत की विरासत का संरक्षण।

साणंद केयन्स सेमीकॉन प्लांट का उद्घाटन

- केयन्स सेमीकॉन प्लांट में वाणिज्यिक उत्पादन की शुरुआत उन्नत इंटेलिजेंट पावर मॉड्यूल के निर्माण से हुई।
- यह प्लांट इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन के तहत स्वीकृत परियोजनाओं में से माइक्रोन टेक्नोलॉजी के बाद वाणिज्यिक उत्पादन शुरू करने वाली दूसरी सेमीकंडक्टर सुविधा है।
- संयंत्र के सभी चरण पूरे होने पर, इसकी उत्पादन क्षमता प्रतिदिन 6.33 मिलियन यूनिट होगी।
- यह परियोजना विशेष महत्व रखती है क्योंकि इसके अंतर्गत भारत की दूसरी आउटसोर्स्ड सेमीकंडक्टर असेंबली एंड टेस्ट/असेंबली, टेस्टिंग, मार्किंग और पैकिंग इकाई उत्पादन चरण में प्रवेश कर गई है।
- यह सुविधा स्वदेशी सेमीकंडक्टर पैकेजिंग क्षमता के निर्माण में योगदान देगी, भारत के चिप इकोसिस्टम में एक महत्वपूर्ण कमी को दूर करेगी।

20 हजार करोड़ रुपये की सौगातें

पीएम मोदी ने वाव-थारद में 20 हजार करोड़ रुपये से अधिक की अनेक विकास परियोजनाओं की आधारशिला रखी और उद्घाटन कर राष्ट्र को समर्पित किया।

अहमदाबाद के साणंद में उद्घाटन किया। इतना ही नहीं यहां पानी, नवीकरणीय ऊर्जा, पर्यटन से जुड़ी परियोजनाएं राष्ट्र को समर्पित की। इसके साथ ही, गांधी नगर में महावीर जयंती पर सम्राट संप्रति संग्रहालय का भी प्रधानमंत्री मोदी ने उद्घाटन किया।

गुजरात के साणंद में केन्स सेमीकॉन ओसैट सुविधा का प्रधानमंत्री मोदी ने उद्घाटन किया जो भविष्य की प्रौद्योगिकियों और नवाचार में अग्रणी रूप से उभरने के भारत के प्रयासों को और गति देगा। पीएम मोदी ने कहा कि 28 फरवरी को माइक्रोन के प्लांट में प्रोडक्शन की शुरुआत हुई थी और 31 मार्च को केन्स टेक्नोलॉजी के सेमीकंडक्टर प्लांट में प्रोडक्शन शुरु हो रहा है। भारत की इस उपलब्धि पर उन्होंने कहा कि यह भारत का 'टेकेड' है! प्रौद्योगिकी, एआई और सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में हमारी पहल का लाभ पूरी मानवता और पूरी दुनिया को मिलने वाला है। नए प्लांट से 'मेक इन इंडिया' और 'मेक फॉर द वर्ल्ड' को और अधिक बल मिलेगा।

भारत का मानना है, 21वीं सदी का यह कालखंड, सिर्फ आर्थिक प्रतिस्पर्धा का समय नहीं है। यह फ्यूचर के टेक लैंडस्केप को शेप करने का समय है। इस दशक में भारत, टेक्नोलॉजी से जुड़े जो पहल कर रहा है, वो आने वाले दशकों में भारत की लीडरशिप को

उद्घाटन...

सड़क और रेल कनेक्टिविटी बढ़ी

5,100 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से निर्मित अहमदाबाद-धोलेरा एक्सप्रेसवे का उद्घाटन।

यह एक्सप्रेसवे क्षेत्रीय संपर्क को बेहतर बनाएगा, धोलेरा विशेष निवेश क्षेत्र में औद्योगिक विकास को बढ़ावा देगा।

- गांधीनगर-कोबा-आरोदराम रोड पर स्थित पीडीपीयू जंक्शन पर भी फ्लाईओवर का उद्घाटन।
- कनलस-जामनगर दोहरीकरण परियोजना (28 किमी), राजकोट-कनलस दोहरीकरण परियोजना का एक भाग (111.20 किमी) और गांधीधाम-आदिपुर खंड (10.69 किमी) के चौगुने विस्तार राष्ट्र को समर्पित।
- हिम्मतनगर-खेड़ब्रह्मा गेज रूपांतरण परियोजना (54.83 किमी) का भी उद्घाटन किया, जिससे क्षेत्र में रेल संपर्क और यात्री आवागमन में सुधार होगा।
- खेड़ब्रह्मा-हिम्मतनगर-असरवा ट्रेन सेवा को हरी झंडी दिखाई।

ये सुविधाएं भी बढ़ी

3,650 करोड़ रुपये की लागत से तैयार खावड़ा पूलिंग स्टेशन-2 और उससे जुड़े 4.5 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा ट्रांसमिशन लाइन प्रोजेक्ट का उद्घाटन।

- अहमदाबाद के असरवा स्थित सिविल अस्पताल में 858 बिस्तरों वाले रैन बसेरा और गांधीनगर के सिविल अस्पताल और जीएमईआरएस मेडिकल कॉलेज में इसी तरह की सुविधाओं का उद्घाटन।
- लगभग 1,780 करोड़ रुपये की लागत वाली दो प्रमुख जल पाइपलाइन परियोजना राष्ट्र को समर्पित।
- अहमदाबाद के वेजलपुर में छात्रावास का उद्घाटन।

प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

रखी गई इन परियोजनाओं की आधारशिला

- पक्की शोल्डर वाली चार लेन की इदर-बडोली बाईपास सड़क निर्माण।
- एनएच-754के के धोलावीरा-मौवाना-वाउवा-संतालपुर खंड (पैकेज-II) को दो लेन की पक्की शोल्डर वाली सड़क का अपग्रेडेशन।
- गांधीनगर-कोबा-एयरपोर्ट रोड पर भाईजीपुरा जंक्शन पर बनने वाले फ्लाईओवर सहित कई महत्वपूर्ण सड़क इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट। फ्लाईओवर के नीचे व्यवस्थित पार्किंग की सुविधा उपलब्ध होगी।
- बनासकांठा में बलराम महादेव और विश्वेश्वर महादेव में पर्यटन इंफ्रास्ट्रक्चर कार्यों की आधारशिला।
- अंबाजी और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के लिए जल आपूर्ति योजना। इससे लगभग 1.5 लाख लोगों को लाभ होगा।

लगभग **1,000** करोड़ रु. के निवेश से गांधीनगर जिले में निर्मित तीन साबरमती नदी तट विस्तार परियोजना।

सशक्त करेंगे। अगर एआई अपनाने के मामले में देखें, तो भारत दुनिया में सबसे आगे है। डिजिटल इंडिया की सफलता, फिनटेक में हो रहा शानदार काम, यह टेक्नोलॉजी पर भारतीयों के भरोसे को दिखाता है।

महावीर जयंती के अवसर पर पीएम मोदी ने गांधीनगर के कोबा तीर्थ में सम्राट संप्रति संग्रहालय का उद्घाटन किया। अशोक के पौत्र और जैन धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए प्रसिद्ध सम्राट संप्रति के नाम पर स्थापित यह संग्रहालय जैन धर्म की समृद्ध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत को प्रदर्शित करता है। कार्यक्रम में पीएम मोदी ने कहा कि आज जब पूरा विश्व अस्थिरता और अशांति की आग में झुलस रहा है, ऐसे समय में सम्राट संप्रति संग्रहालय का संदेश केवल भारत के लिए ही नहीं, बल्कि समस्त मानवता के लिए बहुत अहम है। ताड़पत्र और भोजपत्र पर अंकित सैकड़ों वर्ष पुराना दुर्लभ ज्ञान कोबा तीर्थ में संरक्षित और संकलित किया गया है। यह प्रयास केवल हमारे अतीत और वर्तमान को जोड़ने वाला नहीं, बल्कि हमारे भविष्य के लिए भी बहुत उपयोगी है।

PMO India
@PMOIndia

हमारी economy के fundamentals मज़बूत हैं।

और सरकार पल-पल बदलते हालात पर नज़र रखे हुए है।

सरकार, इसके short-term, medium-term और long-term,ऐसे हर प्रभाव के लिए एक रणनीति के साथ काम कर रही है: PM @narendramodi

रक्षा मंत्री कार्यालय/ RMO India
@DefenceMinIndia

लगभग पाँच वर्ष पहले, जब प्रधानमंत्री जी ने, सैनिक स्कूलों में बच्चियों के प्रवेश की शुरुआत का निर्णय लिया, तो वह एक ऐतिहासिक निर्णय था। वह निर्णय, हमारी नारी शक्ति के सशक्तिकरण की दिशा में, एक क्रांतिकारी कदम था। मुझे यह देखकर बड़ी प्रसन्नता होती है, कि इस विद्यालय की होनहार बालिकाओं ने, inter-school बास्केटबॉल, फुटबॉल, एथलेटिक्स तथा cultural programs में, उत्कृष्ट प्रदर्शन करके यह साबित कर दिया है, कि हमारी 'बेटियाँ', किसी भी क्षेत्र में, हमारे 'बेटों' से कम नहीं हैं: रक्षा मंत्री श्री @rajnathsingh

Office of Amit Shah
@AmitShahOffice

AI समिट में देश के युवाओं के लिए जो अवसर बनाने का काम मोदी जी कर रहे थे, उसमें कांग्रेस ने बाधा डालने का काम किया। इसे पूरे देश ने देखा है और इस पर निश्चित रूप से कठोर कार्रवाई होनी चाहिए :केन्द्रीय गृह मंत्री श्री @AmitShah जी #AmitShahOnTimesNow

Nitin Gadkari
@nitin_gadkari

Union Cabinet, chaired by Prime Minister Shri @narendramodi Ji, has approved the Small Hydro Power (SHP) Development Scheme for FY 2026–27 to FY 2030–31. The initiative will promote projects of 1–25 MW capacity, particularly in hilly and North-Eastern regions with significant untapped potential.

Giriraj Singh
@girirajsinghbjp

माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत स्मार्टफोन मैन्युफैक्चरिंग के क्षेत्र में एक प्रमुख वैश्विक हब के रूप में उभर रहा है।

स्मार्टफोन अब देश का सबसे बड़ा मर्चेंडाइज निर्यात बन चुका है, और अमेरिका को आपूर्ति के मामले में भारत ने चीन को पीछे छोड़ दिया है।

'मेक इन इंडिया' और PLI योजना के माध्यम से उत्पादन, निवेश, रोजगार और निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है।

Dharmendra Pradhan
@dpradhanbjp

Until 2014, only 54 institutions from India were featured in the QS rankings. Today, that number has risen to 290.

This remarkable growth over the past 11-12 years stands as a global testament to our sustained efforts in strengthening and transforming the education sector.

आत्मनिर्भरता पर जोर | गुजरात के साणंद में सेमीकंडक्टर प्लांट का किया उद्घाटन...

मोदी ने 'मेड इन इंडिया-मेक फॉर द वर्ल्ड' का मंत्र दिया

पंजाब केसरी/साणंद

टीम इंडिया की भावना के साथ मिलकर करना होगा काम : मोदी

पश्चिम एशिया संकट पर मुख्यमंत्रियों के साथ बैठक में पीएम ने कहा-जमाखोरी के खिलाफ सख्त कदम उठाएं, हालात नियंत्रण में

गलत सूचना फैलाने वालों को चेतावनी

राजनाथ अंतर-मंत्रालयी समूह के अध्यक्ष

जनता का विश्वास बनाए रखने पर जोर

पीएम ने की सराहना

जल संरक्षण का कोरिया मॉडल बना राष्ट्रीय उदाहरण

पत्रिका ब्यूरो
patrika.com

रायपुर. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को रेडियो कार्यक्रम मन की बात की 132वीं कड़ी में जल संरक्षण के लिए छत्तीसगढ़ के कोरिया जिले में किए जा रहे कामों का जिक्र किया। उन्होंने कोरिया मॉडल की सराहना की और इसे जनभागीदारी आधारित जल संरक्षण का प्रेरक उदाहरण बताया। दरअसल, केंद्र द रेन तथा राज्य शासन के मोर गांव मोर पानी संचालित किया गया। इस पहल ने जल संरक्षण को केवल एक सरकारी योजना से आगे बढ़ाकर व्यापक जनभागीदारी पर आधारित आंदोलन बना दिया है। इससे कोरिया के भूजल स्तर में 5.41 मीटर की उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज हुई है।

यह है कोरिया मॉडल: जल संचय जन भागीदारी अभियान के अंतर्गत लागू 5 फीसदी मॉडल के तहत किसानों ने अपनी भूमि का 5 फीसदी भाग छोटी सीढ़ीदार जल संरचनाओं के लिए समर्पित किया

विमान मरम्मत केंद्र से आत्मनिर्भरता बढ़ेगी

प्रयास

ग्रेटर नोएडा, वरिष्ठ संवाददाता। नोएडा एयरपोर्ट परिसर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पहले एमआरओ (मेंटिनेंस, रिपेयर और ओवरहॉल) हब की नींव रखी। उन्होंने कहा कि विमानों का 85 प्रतिशत रखरखाव अभी विदेश पर निर्भर है। एमआरओ हब का निर्माण अकासा एयर करेगी। इसके बनने के बाद विमानों की मरम्मत के लिए आत्मनिर्भरता बढ़ेगी।

नोएडा एयरपोर्ट परिसर में शनिवार को एमआरओ हब की नींव रखी गई। • हिन्दुस्तान

संभावनाओं वाला बाजार

भारत में एमआरओ उद्योग वर्ष 2021 में 1.7 बिलियन डॉलर का था, जो वर्ष 2030 तक साढ़े चार बिलियन डॉलर तक पहुंचने की संभावना है।

नोएडा एयरपोर्ट 'विकसित भारत-विकसित उत्तर प्रदेश' अभियान का नया अध्याय : पीएम मोदी

जेवर, 28 मार्च(दिनेश शर्मा/ वीरेन्द्र शर्मा): गौतम बुद्ध नगर के जेवर में निर्मित नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के फेज-1 का लोकार्पण प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को किया। इस अवसर पर उन्होंने एयरपोर्ट के अत्याधुनिक कार्गो टर्मिनल

प्रधानमंत्री की अपील- वैश्विक संकट का मिलकर करें सामना

पीएम मोदी ने कहा कि पश्चिमी एशिया में युद्ध चल

'युवा भारत' कर रहा राष्ट्र निर्माण : मोदी

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी):

चुनौतियों का मिलकर सामना करें देशवासी

पीएम मोदी ने कहा- निरंतर अभ्यास से ही बढ़ती है बुद्धिमत्ता

मछुआरे आत्मनिर्भर भारत की नींव

विश्व पृथ्वी दिवसः 22 अप्रैल

पृथ्वी को बचाना हम सबका दायित्व

"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः" यानी 'भूमि मेरी माता है और मैं पृथ्वी का पुत्र हूं।' यह दर्शाता है कि मनुष्य और प्रकृति के बीच रिश्ता अटूट है। इतना ही नहीं, पृथ्वी जीवन को पोषित करती है और हमारे विकास के लिए आवश्यक पारिस्थितिकी तंत्र का पोषण करती है। यही कारण है कि हर साल 22 अप्रैल को विश्व पृथ्वी दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन को मनाने का मकसद पर्यावरण संरक्षण की तरफ ध्यान खींचना है। साथ ही, हमारा यह कर्तव्य है कि हम पृथ्वी के स्वास्थ्य की रक्षा और संवर्धन के लिए अत्यंत सावधानी से करें परोपकार...

"पृथ्वी दिवस पर, मैं उन सभी की सराहना करता हूं जो हमारी धरती को बेहतर बनाने के लिए काम कर रहे हैं। भारत प्रकृति के साथ सद्भाव से रहने की हमारी संस्कृति के अनुरूप सतत विकास को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। **– नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री**

न्यू इंडिया समाचार
पाक्षिक

आर.एन.आई, DELHIN/2020/78812, 16-30 अप्रैल, 2026
आरएनआई DELHIN/2020/78812 (प्रकाशन तिथि- 3 अप्रैल 2026, कुल पृष्ठ-54)

प्रधान संपादक
धीरेन्द्र ओझा, प्रधान महानिदेशक
पत्र सूचना कार्यालय, नई दिल्ली

प्रकाशक
कंचन प्रसाद
महानिदेशक, केंद्रीय संचार ब्यूरो

कमरा संख्या-278, केंद्रीय संचार ब्यूरो,
सूचना भवन, द्वितीय तल,
नई दिल्ली- 110003 से प्रकाशित